भौजपुरी

Version 2026

تعليم الكلام
لأن الله هكذا
أحب العالم حتى بذل
إبنه الوحيد لكي لا يهلك
كل من يؤمن به بل تكون
له الحياة الأبدية.
(يوحنا ٣:١٦)

# सबक़ - 1

## नजात के पैग़ाम

शुरुआत में, अल्लाह तआला आसमान अउर ज़मीन के बनवले। दुनिया में हम जे कुछो देखत बानी, ऊ सब कुछ ख़ुदा के बनावल बा। आखिर में, ख़ुदा हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) अउर उनकर बीवी हव्वा (अलैहिस्सलाम) के पैदा कइलन। ख़ुदा उनकरा लोग के एगो खूबसूरत बाग़ में रखलन, अउर ओहिजा के सभे चीज़ पर उनकर इख़्तियार देलन।

बाकिर ख़ुदा एक हुक्म भी देलन। ऊ फरमवलन:

**"लेकिन नेक ओ बद के पहचान के दरख़्त के फल मत खइहा, काहे कि जे दिन तू एकरा के खइबा, ओही दिन तू ज़रूर मर जइबा।"**

बाकि हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) अउर उनकर बीवी का कइलन? ऊ लोग ओही दरख़्त के फल खा लिहलन अउर अल्लाह के हुक्म के तोड़ दिहलन। बस, एह एक नाफ़रमानी के वजह, उनकर रिश्ता अल्लाह से टूट गइल। अगर हमार दिल में एको गुनाह होखे, त हम ख़ुदा के हुज़ूर में ना जा सकीले। जइसे हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) गुनाह कइलन, ओइसहीं हमनी सभी गुनहगार बानी। हर आदमी के अंदर ई एगो मसला बा—गुनाह, जे हमनी के अल्लाह के क़रीब जाए से रोक देला।

एगो मिसाल देखीं। मान लीं कि एगो बोतल में साफ पानी बा। त हम ओह पानी के पी सकत बानी। लेकिन अगर केहू ओह में खाली एक बूंद कीचड़ के पानी डाल दे, त का ऊ पानी अब पीए लायक रही? ना! खाली एक बूंद नापाक चीज़ पूरा पानी के नापाक बना देला। ओइसहीं, अगर हम पाक होखीं, त खाली एक गुनाह हमके नापाक बना देला। अउर जे नापाक होखे, का ऊ जन्नत में जा सकेला? हरगिज़ ना। का ऊ अल्लाह के पाक हुज़ूरी में जा सकेला? ना जा सकेला।

त फेर सवाल ई बा कि अगर हम गुनहगार बानी, त ख़ुदा के लगे कइसे जा सकत बानी?

एह बात के समझे खातिर हम हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मिसाल देखत बानी, जिनका के ख़लीलुल्लाह कहल जाला। ख़ुदा उनकरा के हुक्म देलन कि ऊ अपना बेटा के क़ुरबानी पेश करी। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ख़ुदा के हुक्म सुनलन अउर ओकर पालन करत अपना बेटा के क़ुरबानी खातिर तैयार हो गइलन। लेकिन बिलकुल आखिरी घड़ी में, अल्लाह उनकरा के रोक दिहलन अउर एगो जानवर दे दिहलन ताकि ऊ अपना बेटा के जगह पर ओकर क़ुरबानी दे सका।

त सवाल ई बा कि क़ुरबानी काहे दी जाले? एकर मक़सद का बा?

अक्सर लोग एह सवाल के सही जवाब ना देवे पावेला। बाकि अगर हम ख़ुदा के दोसर नबियन के देखीं, त ऊ सभो क़ुरबानी देले रहलन।

हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम), हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम), हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम)—सभे क़ुरबानी देले रहलन। तौरेत शरीफ़ में हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के ज़रिए बतावल गइल कि जब आदमी गुनाह करे, त ओकरा अपना गुनाह खातिर क़ुरबानी देवे के चाहीं। एगो जगह अल्लाह के कलाम कहेला: "और ख़ून बहाए बग़ैर माफ़ी ना होखेला।" एह वजह, सभे पैग़म्बर क़ुरबानी देत रहलन ताकि गुनाह माफ़ हो सके। बाकि इहाँ एगो मसला बा। आज के ज़माना में गुनाह बहुत आम बात बा। अगर हम अपना ज़िंदगी के देखीं, त हमहूँ कई बेर अल्लाह के हुक्म के तोड़ले बानी। त का साल में एक बेर क़ुरबानी दे देला से काम चल जाई? जी नाही।

एही से ख़ुदा अउरी पैग़म्बर भेजलन, जे लोग एगो मसीह के आवे के ख़बर दिहलन। ऊ बतवलन कि मसीह एके बेर एगो कामिल क़ुरबानी दीहलन, जे पूरा दुनिया के गुनाह खातिर काफ़ी होई।

फेर एक दिन, हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आसमान से आइलन अउर हज़रत मरयम (अलैहिस्सलाम) के पैग़ाम दिहलन:

"तू उम्मीद से होके एगो बेटा के जनम दिहबू। तू ओकर नाम ईसा (नजात देवे वाला) रखिहा।" हज़रत मरयम (अलैहिस्सलाम) हैरान होके पूछली: "ई कइसे हो सकेला? अभी त हम कुँवारी बानी।"

हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) फरमवलन: "रूहुल क़ुद्दुस तोहरा पर नाज़िल होई अउर अल्लाह तआला के क़ुदरत के साया तोहरा पर छा जाई। एही से ई बच्चा क़ुद्दूस होई अउर अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाइ।" अउर जइसे जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) बतवले रहलन, ओइसहीं भइल।

का कवनो दोसर नबी के पैदाइश एतना ख़ास रहल बा?

का फ़रिश्ता लोग कवनो दोसर नबी के पैदा होखे के ख़बर लेके आइल रहे?

का कवनो अउर नबी बाप बिना पैदा भइल?

हज़रत ईसा अल-मसीह अपना मोजिज़न खातिर भी बहुत मशहूर बाड़न। ऊ बीमार लोगन के ठीक कइलन, मुर्दन के ज़िंदा कइलन, एक बेर पानी पर चललन। एगो मौका पर खाली पाँच रोटी अउर दू मछरी से पाँच हजार लोगन के खाना खिआ दिहलन।

का कवनो दोसर नबी अइसन ताक़तवर मोजिज़ा देखवले?

हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश ख़ास रहल। उनकर मोजिज़ा ख़ास रहल। उनकर तालीम भी ख़ास रहल।

हर नबी कहलन: "ई अल्लाह के रास्ता बा, एह पर चलऽ।"

बाकि हज़रत ईसा अल-मसीह फरमवलन: "राह अउर हक़ अउर ज़िंदगी हमहीं बानी। हमार वसीला बिना केहू बाप के लगे ना जा सकेला।" दोसर पैग़म्बर लोगन खाली रास्ता देखावत रहलन, बाकि हज़रत ईसा अल-मसीह खुद रास्ता बन गइलन।

सबसे ख़ास बात ई बा कि हज़रत ईसा अल-मसीह हमनी के गुनाह खातिर अपना जान क़ुरबान कर दिहलन। एगो कामिल क़ुरबानी, बिना कवनो दाग़ के। ऊ हमनी खातिर सलीब पर आपन जान दे दिहलन।

अउर का रउआ जानत बानी? तीन दिन बाद ऊ फेर ज़िंदा हो गइलन! का रउआ कबो अइसन आदमी देखले बानी जे तीन दिन क़ब्र में रहे अउर फेर ज़िंदा हो गइलन?

हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश ख़ास रहल। उनकर मोजिज़ा ख़ास रहल। उनकर कलाम ख़ास रहल। उनकर मौत ख़ास रहल। अउर उनकर फेर से ज़िंदा हो जाना सबसे ख़ास रहल।

अब ऊ कहाँ बाड़न?

ऊ आसमान में बाड़न, अल्लाह के हुज़ूर में। बाकि सभे दोसर नबी, उस्ताद अउर रूहानी रहनुमा आजो क़ब्र में बाड़न। लोग आजो उनकर क़ब्र देखे जालन। बाकि हज़रत ईसा अल-मसीह के क़ब्र खाली बा, काहे कि ऊ ज़िंदा होके जन्नत चल गइलन।

एगो वक़्त मुक़र्रर बा— क़ियामत के वक़्त। ओह समय हज़रत ईसा अल-मसीह फेर से आईहें, अउर सभे लोगन के इंसाफ़ करीहें।

हमनी के ओह दिन खातिर तैयार रहे के चाहीं। अउर तैयारी के रास्ता ई बा कि हम अपना गुनाह से तौबा करीं, हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान ले आईं, अउर उनकर शागिर्द बन जाईं।

जे अइसन करी, ऊ क़ियामत के दिन खातिर तैयार रही। जे ना करी, ऊ जहन्नम के आग में जाई।

आज ई पैग़ाम हमनी के सामने बा। फ़ैसला आजे करे के बा।

## सबक – 2

## हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास पैदाइश

पिछला सबक में, हम रउआ लोगन के हज़रत ईसा अल-मसीह के वाक़िआ सुनवनी। याद रखीं, हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश बहुत ख़ास रहल। ऊ एगो कुँवारी से पैदा भइलन। फ़रिश्ता लोग भी आइल रहे अउर उनकर पैदाइश के ऐलान कइलस। का कवनो दोसर नबी के पैदाइश एतना ख़ास रहल?

हज़रत ईसा अल-मसीह के मोजिज़ात भी बहुत ख़ास रहल। ऊ बीमार लोगन के ठीक कइलन, मुर्दा लोगन के ज़िंदा कइलन। एगो बेर हज़रत ईसा अल-मसीह खाली पाँच रोटी अउर दू मछरी से पाँच हजार लोगन के खाना खिआ दिहलन! का कवनो दोसर नबी एतना बड़ा मोजिज़ात देखवले रहलन?

हज़रत ईसा अल-मसीह के तालीम भी लाजवाब रहल। ऊ फरमवलन:

"राह अउर हक़ अउर ज़िंदगी हमहीं बानी। हमार वसीला बिना केहू बाप के लगे ना जा सकेला।"

त हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश ख़ास रहल, ऊ बड़ा-बड़ा मोजिज़ात देखवले, अउर उनकर तालीम बेमिसाल रहल। बाकि एह सभ से भी ज़्यादा ख़ास बात ई बा कि हज़रत ईसा अल-मसीह हमनी के गुनाहन के माफ़ी खातिर अपना जान के क़ुर्बानी दिहलन। उनकरा के दफ़्न कइल गइल, अउर तीन दिन बाद ऊ फेर से ज़िंदा हो गइलन। ऊ क़ब्र से निकल के जन्नत चल गइलन! आज हज़रत ईसा अल-मसीह जन्नत में बाड़न, अउर क़ियामत के दिन से पहिले ऊ फेर से आईहें।

आज हम रउआ लोगन के हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास पैदाइश के बारे में इंजील शरीफ़ के एगो हिस्सा सुनावे चाहत बानी। मत्ती के पहिला हिस्सा में इंजील शरीफ़ के भीतर उनकर मोजिज़ाना पैदाइश लिखल बा।

इंजील-ए-मत्ती (1:18-25)

हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश एह तरीका से भइल:

ओह समय उनकर माई मरियम के मँगनी यूसुफ़ से हो चुकल रहल, बाकिर शादी से पहिले ही पता चलल कि ऊ रूहुल-क़ुद्स से हामिला बाड़ी।

उनकर मंगेतर यूसुफ़ रास्तबाज़ आदमी रहल। ऊ मरियम के सबके सामने बदनाम ना करे चाहत रहलन। एही से ऊ चुपचाप ई रिश्ता तोड़े के सोचलन।

जब ऊ एह बात पर ग़ौरो-फ़िकर करत रहलन, त रब के एगो फ़रिश्ता ख़्वाब में उनकरा लगे आइल अउर फरमवलस:

"यूसुफ़ बिन दाऊद, मरियम से शादी करके ओकरा के अपना घर ले आवे से मत डर, काहे कि जे बच्चा पैदा होखे वाला बा, ऊ रूहुल-क़ुद्स से बा।

ओकरा बेटा होई, अउर तू ओकर नाम ईसा रखिहा, काहे कि ऊ अपना क़ौम के उनकर गुनाहन से रिहाई दी।"

ई सभ कुछ एह खातिर भइल ताकि रब के ऊ बात पूरा हो जाव जे ऊ अपना नबी के मारिफ़त फरमवले रहलन:

"देखऽ, एगो कुँवारी हामिला होई। ऊ बेटा जनम दी, अउर लोग ओकर नाम इम्मानुएल रखी।"

(इम्मानुएल के मतलब बा: "ख़ुदा हमनी के साथ बाड़न।")

जब यूसुफ़ नींद से जागलन, त रब के फ़रिश्ता के हुक्म के मुताबिक़ मरियम से शादी कर लिहलन अउर ओकरा के अपना घर ले अइलन।

बाकि जबले बेटा पैदा ना भइल, तबले ऊ मरियम के साथ हमबिसतर ना भइलन। अउर बच्चा के नाम ईसा रखलन।

अब आईं, एह वाक़िआ से जुड़ल चार गो अहम बात देखल जाव, जे हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में सिखावेला।

पहिली बात: हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश के पैग़ाम पैग़म्बर लोग बहुत पहिले से देले रहल।

जइसे हज़रत यशायाह (अलैहिस्सलाम) हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश से करीब सात सौ बरिस पहिले फरमवले रहलन:

"देखऽ, एगो कुँवारी हामिला होई। ऊ बेटा जनम दी अउर लोग ओकर नाम इम्मानुएल रखी।"

(इम्मानुएल के मतलब बा: "ख़ुदा हमनी के साथ बाड़न।")

दूसरी बात: हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) हज़रत मरियम (अलैहिस्सलाम) के उनकर पैदाइश के बारे में बतवलन। अउर यूसुफ़ के भी एगो फ़रिश्ता ख़्वाब में आके सभ बात समझवलस।

इंजील शरीफ़ में लिखल बा कि फ़रिश्तन के बहुत बड़ा लश्कर आइल रहल अउर चरवाहन के हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश के ख़ुशख़बरी सुनवलस।

ई सभ बात एह बात के सबूत बा कि हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश बहुत ख़ास रहल।

तीसरी बात: हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश सभसे अलग रहल, काहे कि ऊ एगो कुँवारी माई से पैदा भइलन।

हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से लेके हज़रत ईसा अल-मसीह तक हर आदमी बाप के ज़रिए पैदा होत रहल। बाकि हज़रत ईसा अल-मसीह अल्लाह के रूह से एगो कुँवारी से पैदा भइलन — बिना कवनो बाप के।

एही कारण ऊ बिल्कुल पाक रहलन। उनकरा भीतर कवनो गुनाह ना रहल।

चौथी बात: फ़रिश्ता यूसुफ़ से कहलस: "ओकर नाम ईसा रखिहा, काहे कि ऊ अपना क़ौम के उनकर गुनाहन से रिहाई दी।" गुनाह से निजात देहल हज़रत ईसा अल-मसीह के मक़सद रहल।

इंजील शरीफ़ कहेला: "सब लोग गुनाह कइले बा, अउर सब अल्लाह के जलाल से महरूम बा।"

बाकि हज़रत ईसा अल-मसीह में कवनो गुनाह ना रहल। एही से ऊ हमनी खातिर सलीब पर अपना जान के क़ुर्बानी दिहलन, ताकि हमनी के गुनाह माफ़ हो सके।

उम्मीद बा कि आज रउआ इंजील शरीफ़ के ताक़त के समझले होखब।

हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश सचमुच सभसे ख़ास रहल।

ऊ आजो रउआ के पुकारत बाड़न, ताकि रउआ उनकर शागिर्द बन जाईं।

का रउआ उनकर रास्ता इख़्तियार करे खातिर तैयार बानी?

# सबक – 3

## हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास मोजिज़ात

पिछला सबक में, हम हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश के वाक़िआ के बारे में पढ़नी, जे इंजील शरीफ़ में लिखल बा। बहुत सारा पैग़म्बर पहिले से बतवले रहलन कि हज़रत ईसा अल-मसीह पैदा होईहें। फ़रिश्ता लोग भी आइल अउर हज़रत मरियम (अलैहिस्सलाम) अउर दोसर लोगन के एह बात के ख़बर दिहलस। हज़रत ईसा अल-मसीह एगो कुँवारी से पैदा भइलन। ऊ एह दुनिया में एह खातिर आइलन कि हमनी के गुनाह खातिर क़ुर्बानी बन के हमनी के बचा सकसु। ऊ अपना जान क़ुर्बान कर दिहलन। का कवनो दोसर नबी के पैदाइश एतना ख़ास रहल?

आज हम हज़रत ईसा अल-मसीह के मोजिज़ात के बारे में बात करब।

ऊ बीमार लोगन के ठीक कइलन। ऊ मुर्दा लोगन के ज़िंदा कइलन। एगो बेर तूफ़ान के शांत कर दिहलन। एगो बेर पानी पर भी चललन। का कवनो दोसर नबी एतना मोजिज़ा देखवले रहलन?

हज़रत ईसा अल-मसीह के तालीम भी बहुत ख़ास रहल। ऊ फरमवलन:

"राह अउर हक़ अउर ज़िंदगी हमहीं बानी। हमार वसीला बिना केहू बाप के लगे ना जा सकेला।"

हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश ख़ास रहल, ऊ अज़ीम मोजिज़ात कइलन, अउर उनकर तालीम भी बहुत ज़बरदस्त रहल। बाकि सबसे बड़ी बात ई रहल कि ऊ अपना जान क़ुर्बान कइलन ताकि हमनी के गुनाह माफ़ हो सके। उनकरा के दफ़्न कइल गइल, बाकिर तीन दिन बाद ऊ फेर ज़िंदा हो गइलन। ऊ क़ब्र से ज़िंदा निकल अइलन अउर जन्नत चल गइलन। अब ऊ क़ियामत के दिन तक जन्नत में बाड़न।

आज हम इंजील शरीफ़ के एगो अइसन हिस्सा पढ़ब, जे हज़रत ईसा अल-मसीह के एगो अउरी मोजिज़ा के बयान करेला। बाकि ओकरा पहिले हम रउआ से एगो सवाल पूछे चाहत बानी: गुनाह के माफ़ी के दे सकेला? उम्मीद बा कि रउआ जवाब होई: "सिर्फ़ अउर सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह माफ़ कर सकेलें।"

आईं अब इंजील-ए-मत्ती (9:1-8) के ई वाक़िआ पढ़ल जाव।

कश्ती पर बैठ के ईसा झील के पार गइलन अउर अपना शहर पहुँच गइलन।

ओहिजा लोग एगो लकवा के मरीज़ के चारपाई पर लाद के उनकरा लगे ले आइल।

जब हज़रत ईसा अल-मसीह उनकर ईमान देखलन, त ऊ कहलन:

"बेटा, हिम्मत रख। तोहर गुनाह माफ़ कर दिहल गइल बा।"

ई सुनके शरीअत के कुछ उलमा अपना मन में सोचे लगलन:

"ई त कुफ़्र के बात कर रहल बा!"

हज़रत ईसा अल-मसीह उनकर मन के बात जान गइलन। एही से ऊ पूछलन:

"रउआ लोग मन में बुरा बात काहे सोचत बानी?

का ई कहे में आसान बा कि ‘तोहर गुनाह माफ़ हो गइल’, कि ई कहे में कि ‘उठ अउर चल-फिर’?

बाकिर हम रउआ के देखाइब कि इब्ने-आदम के धरती पर गुनाह माफ़ करे के इख़्तियार बा।"

फेर ऊ लकवा के मरीज़ से कहलन:

"उठ, अपना चारपाई उठा अउर घर चल जा।"

ऊ आदमी तुरन्त उठ गइल अउर अपना घर चल गइल।

ई देख के भीड़ पर अल्लाह के ख़ौफ़ तारी हो गइल अउर ऊ अल्लाह के तमजीद करे लगल लोग, काहे कि अल्लाह इंसान के अइसन इख़्तियार दिहले रहलन।

ई वाक़िआ हमनी के हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में चार गो अहम बात सिखावेला।

पहिली बात: हज़रत ईसा अल-मसीह लकवा के मरीज़ के ठीक कइलन। उनकर पूरी ज़िंदगी में बीमार लोग ठीक होत रहल। जे लोग लकवा के मरीज़ के दोस्त रहल, ऊ लोग समझत रहल कि खाली हज़रत ईसा अल-मसीह ही उनकर मदद कर सकत बाड़न। एही से ऊ अपना दोस्त के चारपाई पर उठा के उनकरा लगे ले अइलन।

हज़रत ईसा अल-मसीह कहलन: "उठ, अपना चारपाई उठा अउर घर चल जा।" आदमी उठ गइल अउर चल पड़ल। आज भी जब हमनी पर कवनो मुसीबत आवे, त हमनी के हज़रत ईसा अल-मसीह के लगे जाए के चाहीं।

दूसरी बात: हज़रत ईसा अल-मसीह गुनहगार लोग से मौहब्बत करेलें। ऊ जानत रहलन कि ई लकवा के मरीज़ गुनहगार बा, फेर भी ऊ ओकरा के "बेटा" कहके बुलवलन। हज़रत ईसा अल-मसीह ओह लोगन के दोस्त बाड़न जे अल्लाह से दूर बाड़े। अगर रउआ आज अल्लाह से दूर बानी, त ई जान लीं कि हज़रत ईसा अल-मसीह रउआ के अपना लगे बुलावत बाड़न।

इंजील शरीफ़ में रोमियों के किताब, बाब 5, आयत 8 में लिखल बा:

"लेकिन अल्लाह हमनी से अपना मौहब्बत के इज़हार एही तरीका से कइलन कि मसीह हमनी खातिर ओह वक़्त अपना जान दिहलन, जब हमनी गुनहगार ही रहीं।"

तीसरी बात: ई वाक़िआ के सबसे बड़ा मोजिज़ा ई बा कि हज़रत ईसा अल-मसीह एह आदमी के गुनाह माफ़ कर दिहलन। ओकरा के ठीक करे से पहिले ऊ कहलन: "बेटा, हिम्मत रख। तोहर गुनाह माफ़ कर दिहल गइल बा।" अगर ऊ खाली एतने कहले रहितन, त लोग सोचत कि सचमुच गुनाह माफ़ भइल कि ना।

बाकिर जब ऊ आदमी के ठीक कइलन, त सभे देख लिहलस कि उनकरा लगे वाक़ई गुनाह माफ़ करे के इख़्तियार बा। ई इख़्तियार खाली अल्लाह के होला। आज भी हज़रत ईसा अल-मसीह रउआ के गुनाह माफ़ कर सकेलें, जइसे ऊ लकवा के मरीज़ के गुनाह माफ़ कइले रहलन।

चउथी बात: हज़रत ईसा अल-मसीह लोगन के दिल के ख़यालात भी जानत रहलन। जब शरीअत के उलमा उनकर बात सुन के मन में बुरा सोचत रहलन, त हज़रत ईसा अल-मसीह उनकर मन के बात जान गइलन। ऊ खाली बाते ना सुनेलें, बलुक दिल के हाल भी जानेलें। अगर ऊ दूसर लोगन के दिल के हाल जान सकत रहलन, त ऊ रउआ दिल के हाल भी जानेलें। हज़रत ईसा अल-मसीह ओह लोग के अपना लगे बुलवलन जे अल्लाह के क़रीब आवे चाहत रहल। बाकिर ऊ ओह लोगन के रोकलन जे अपना दिल में दिखावा रखत रहल। आज रउआ खुद सोचीं कि रउआ कइसन इंसान बानी? हज़रत ईसा अल-मसीह के ज़िंदगी बहुत ताक़तवर रहल। उनकर पैदाइश सबसे अलग रहल। उनकर मोजिज़ात सबसे बढ़ के रहल। आज ऊ रउआ के बुलावत बाड़न कि रउआ अपना गुनाह से तौबा करीं अउर उनकरा पर ईमान ले अइं। ऊ चाहत बाड़न कि रउआ उनकर शागिर्द बन जाईं।

का रउआ तैयार बानी? उम्मीद बा कि रउआ तैयार होखब।

## सबक – 4

## हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास तालीमात

पिछला सबक में, हम हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश अउर उनकर मोजिज़ात के बारे में पढ़नी। बहुत सारा नबी लोगन पहिले से हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश के पेशनगोई कइले रहल। फ़रिश्ता लोगन भी आइल अउर हज़रत मरियम (अलैहिस्सलाम) अउर दोसर लोगन के बतवलस कि हज़रत ईसा अल-मसीह पैदा होखे वाला बाड़न।

ऊ बिना बाप के पैदा भइलन। अल्लाह उनकरा के एह खातिर भेजलन कि ऊ हमनी के गुनाह के माफ़ी खातिर क़ुर्बानी बनसु। का कवनो दोसर नबी के पैदाइश एतना ख़ास रहल?

हज़रत ईसा अल-मसीह बीमार लोगन के ठीक कइलन, मुर्दा लोगन के ज़िंदा कइलन। ई सभ मोजिज़ा ऊ एह खातिर कइलन ताकि गुनहगार लोगन पर अपनी मौहब्बत ज़ाहिर कर सकी। अल्लाह उनकरा के एतना इख़्तियार दिहले रहलन कि ऊ गुनाह माफ़ कर सकत रहलन अउर आदमी के दिल के छुपल ख़याल भी जानत रहलन।

का कवनो दोसर नबी एतना मोजिज़ा कइले रहलन?

आज हम हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास तालीमात पर ग़ौर करब।। ऊ फरमवलन:

"राह अउर हक़ अउर ज़िंदगी हमहीं बानी। हमार वसीला बिना केहू बाप के लगे ना जा सकेला।"

त सोचीं, हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश ख़ास रहल, ऊ बड़ा-बड़ा मोजिज़ा कइलन, अउर उनकर तालीम भी बहुत ज़बरदस्त रहल। बाकि सबसे ख़ास बात ई बा कि हज़रत ईसा अल-मसीह हमनी के गुनाहन के माफ़ी खातिर अपना जान क़ुर्बान कर दिहलन।

उनकरा के दफ़्न कइल गइल, अउर तीसरा दिन ऊ फेर ज़िंदा हो गइलन। फेर ऊ आसमान पर उठा लिहल गइलन। अब ऊ जन्नत में बाड़न अउर क़ियामत के दिन के इंतिज़ार करत बाड़न। अब हम हज़रत ईसा अल-मसीह के तालीम में से एगो अउरी पैग़ाम सुनावे चाहत बानी, जे इंजील शरीफ़ में लिखल बा।

ई पैग़ाम "पहाड़ी वाइज़" के नाम से जानल जाला, जे मत्ती बाब 5, 6 अउर 7 में लिखल बा।

आईं, अब इंजील-ए-मत्ती (7:24-27) पढ़ल जाव।

"एही से जे केहू हमार ई बात सुन के ओह पर अमल करेला, ऊ ओह समझदार आदमी जइसन बा जे अपना घर के बुनियाद चट्टान पर रखलस।

बरखा पड़ल, बाढ़ आइल, आँधी चलल अउर घर के जोर से हिलवलस, बाकि ऊ घर ना गिरल, काहे कि ओकर बुनियाद चट्टान पर रहल।

बाकि जे केहू हमार ई बात सुन के ओह पर अमल ना करेला, ऊ ओह बेवकूफ़ आदमी जइसन बा जे अपना घर रेत पर बनवलस।

जब बरखा पड़ल, बाढ़ आइल अउर आँधी चलल, त ऊ घर धड़ाम से गिर पड़ल।"

ई तालीम हमनी के बतावेला कि दुनिया में दू तरह के लोगन होला।

पहिला ऊ लोगन जे हज़रत ईसा अल-मसीह के बात सुनलें भी अउर ओह पर अमल भी करेलें।

दूसर ऊ लोगन जे बात त सुनलें, बाकि अमल ना करेलें।

दूनो लोग बात सुनलस, बाकि फ़र्क़ ई रहल कि एगो अमल कइलस अउर दोसरा अमल ना कइलस।

अच्छा आदमी के मिसाल ओह आदमी जइसन बा जे अपना घर मज़बूत ज़मीन, यानी चट्टान पर बनवलस।

बाकि बेवकूफ़ आदमी के मिसाल ओह आदमी जइसन बा जे अपना घर रेत पर बनवलस।

जब ज़िंदगी में मुश्किल समय आवेला—चाहे बीमारी होखे, पैसा के तंगी होखे, परिवार के मसला होखे, चाहे दोसर कवनो परेशानी—त जे आदमी हज़रत ईसा अल-मसीह के बात पर अमल करेला, ऊ मज़बूती से खड़ा रहेला।

बाकि जे अमल ना करेला, ऊ टूट जाला, जइसे रेत पर बनल घर तूफ़ान में गिर जाला।

ई तालीम हमनी के हज़रत ईसा अल-मसीह के अज़मत बतावेला।

अब हम इंजील शरीफ़ के एगो अउरी आयत पढ़ब, जे यूहन्ना बाब 14, आयत 6 में बा।

हज़रत ईसा अल-मसीह फरमवलन:

"राह अउर हक़ अउर ज़िंदगी हमहीं बानी। हमार वसीला बिना केहू बाप के लगे ना जा सकेला।"

अगर रउआ अल्लाह तक पहुँचे के रास्ता खोजत बानी, त हज़रत ईसा अल-मसीह ही ऊ रास्ता बाड़न।

अगर हम उनकर बात पर अमल करब, त ऊ हमनी के अल्लाह के लगे ले जइहें।

बाकि एह खातिर ज़रूरी बा कि हम उनकर बात सुनीं अउर ओह पर अमल भी करीं।

हज़रत ईसा अल-मसीह फरमवलन कि:

"हमहीं हक़ बानी।"

अगर रउआ हक़ के जानल चाहत बानी, त हज़रत ईसा अल-मसीह के लगे आईं। उनकर बात सुनीं।

जइसे-जइसे रउआ उनकर साथ चलीं, ऊ रउआ के हक़ देखइहें।

ऊ ई भी फरमवलन: "हमहीं ज़िंदगी बानी।" एहिजा ऊ हमेशा के ज़िंदगी, यानी जन्नत के ज़िंदगी के बात करत बाड़न।

आज हज़रत ईसा अल-मसीह के क़ब्र खाली बा, काहे कि ऊ फेर ज़िंदा होके जन्नत चल गइलन।

अगर रउआ भी हमेशा के ज़िंदगी चाहत बानी, त उनकर बात मानीं अउर ओह पर अमल करीं।

उम्मीद बा कि आज रउआ हज़रत ईसा अल-मसीह के अज़मत के पहचान लिहले होखब।

उनकर पैदाइश सबसे ख़ास रहल। उनकर मोजिज़ात सबसे बड़ा रहल। उनकर तालीमात सबसे सच्ची रहल।

अउर सबसे बढ़के, ऊ हमनी के गुनाह के माफ़ी खातिर क़ुर्बानी देवे आइल रहलन।

आज रउआ लगे मौका बा कि हज़रत ईसा अल-मसीह के बात सुनीं, अपना गुनाह से तौबा करीं, अउर उनकर शागिर्द बन जाईं।

## सबक – 5

## हज़रत ईसा अल-मसीह के ख़ास क़ुर्बानी

आज के सबक हज़रत ईसा अल-मसीह के वफ़ात, यानी उनकर मौत के बारे में बा, जे इंजील शरीफ़ में लिखल बा, खास करके मत्ती बाब 27 में।

एह वाक़िआ में, हम पढ़ब अउर जानब कि हज़रत ईसा अल-मसीह कइसे हमनी के गुनाहन के माफ़ी खातिर सलीब पर अपना जान दे दिहलन।

ई वाक़िआ थोड़ा लंबा बा, एही से हम एकरा के थोड़ा-थोड़ा करके पढ़ब, बीच-बीच में ओकर मतलब पर भी बात करब, अउर एही तरीका से आगे बढ़ब।

आईं, इंजील-ए-मत्ती (27:31-34) पढ़ल जाव।

**फेर उनकर मज़ाक उड़ावे के बाद, ऊ लोग अरग़वानी लिबास उतार के फेर से उनकर अपना कपड़ा पहिरा दिहलस अउर उनकरा के मसलूब करे खातिर ले गइल।**

**शहर से बाहर निकलत बखत ऊ लोगन एगो आदमी के देखलस जे लीबिया के शहर कुरेन के रहे वाला रहल। ओकर नाम शमौन रहल। ओकरा के मजबूर कइल गइल कि ऊ सलीब उठा के ले चले।**

**चलते-चलते ऊ लोग एगो जगह पर पहुँचल जेकर नाम गुलगुत्ता रहल। गुलगुत्ता के मतलब बा "खोपड़ी के जगह"।**

**ओहिजा लोगन उनकरा के एगो अइसन मै पिए खातिर दिहलस, जेमे कड़वी चीज़ मिलावल गइल रहल। बाकि हज़रत ईसा अल-मसीह चखला के बाद ओकरा के पिए से मना कर दिहलन।**

हालाँकि हज़रत ईसा अल-मसीह कभी कवनो गुनाह ना कइले रहलन, फेर भी मज़हबी रहनुमा लोग उनकरा से नफ़रत करत रहल।

ऊ लोग रात में उनकरा के गिरफ़्तार करके अदालत में ले गइल अउर झूठ इल्ज़ाम लगा के उनकरा के मरवावे के कोशिश कइलस।

ऊ लोग डरात रहल कि अगर लोगन हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान ले आई, त फेर उनकर बात ना सुनी।

बाकि असल बात ई रहल कि ई सभ कुछ हज़रत ईसा अल-मसीह के अपना मर्ज़ी से हो रहल।

ऊ त हमनी के गुनाह खातिर क़ुर्बानी बने खातिर ही दुनिया में आइल रहलन।

जब उनकरा के गिरफ़्तार कइल गइल, त ऊ अपना साथी लोग से कहलन:

"फ़िक्र मत करा। अगर हम चाहीं, त अल्लाह तआला से कह सकीला अउर ऊ फ़रिश्तन के पूरा फ़ौज भेज दीहें। बाकि अब हमार क़ुर्बानी के बखत आ गइल बा।"

अब आईं, इंजील-ए-मत्ती (27:35-37) पढ़ल जाव।

फेर फ़ौजी लोग उनकरा के मसलूब कइलस अउर उनकर कपड़ा आपस में बाँट लिहलस। ई तय करे खातिर कि केकरा का मिली, ऊ लोग क़ुर्रा डाललस।

फेर ऊ ओहिजे बइठ के उनकर पहरा देवे लागल।

सलीब पर उनकर सिर के ऊपर एगो तख़्ती लगावल गइल, जेमे लिखल रहल:

"ई यहूदियन के बादशाह ईसा हवे।"

सलीब पर मारल बहुत दर्दनाक अउर ज़ालिमाना सज़ा रहल।

बाकि हज़रत ईसा अल-मसीह ई सभ कुछ हमनी खातिर सहन कइलन।

इंजील शरीफ़, रोमियों के किताब बाब 3, आयत 23 कहेला:

"सब लोग गुनाह कइले बा अउर अल्लाह के जलाल से महरूम बा।"

गुनाह के कारण अल्लाह से हमनी के रिश्ता टूट गइल बा।

अल्लाह पाक बाड़न अउर हमनी गुनहगार बानी।

बाकि रोमियों बाब 5, आयत 8 में लिखल बा:

"अल्लाह हमनी पर अपना मौहब्बत एही तरीका से ज़ाहिर कइलन कि जब हमनी गुनाह में रहीं, त मसीह हमनी खातिर अपना जान दिहलन।"

यानी हज़रत ईसा अल-मसीह के मौत एगो क़ुर्बानी रहल, जे हमनी के गुनाह मिटावे खातिर दिहल गइल।

अब आईं, इंजील-ए-मत्ती (27:45-54) पढ़ल जाव।

दुपहरिया बारह बजे से पूरा इलाका अन्हार में डूब गइल। ई अन्हार तीन घंटा तक रहल।

फेर तीन बजे हज़रत ईसा अल-मसीह ऊँच आवाज़ में पुकारलन:

"एली, एली, लमा शबक़्तनी।"

मतलब:

"ऐ हमार ख़ुदा, ऐ हमार ख़ुदा, तू हमके काहे छोड़ दिहलऽ?"

ई सुन के कुछ लोगन कहे लागल:

"ई त इलियास नबी के बुलावत बा।"

ओह लोग में से एगो आदमी दौड़ के गइल अउर एगो इस्फ़ंज के सिरका में डुबो के डंडा पर लगा दिहलस, ताकि ऊ हज़रत ईसा अल-मसीह के चुसा सके।

बाकिर दोसर लोग कहे लागल:

"रुको, देखल जाव कि इलियास आके इनकर बचाव करेलें कि ना।"

फेर हज़रत ईसा अल-मसीह ज़ोर से पुकारलन अउर अपना जान दे दिहलन।

बहुत लोग ई मंज़र देखत रहल।

कुछ लोग पानी अउर मशरूब देवे चाहत रहल, बाकिर हज़रत ईसा अल-मसीह कुछ ना पियलन।

आसमान में भी अजीब घटना हो रहल। सूरज छिप गइल अउर तीन घंटा तक अन्हार छाइल रहल।

फेर हज़रत ईसा अल-मसीह अपना जान दे दिहलन।

ऊ रउआ खातिर अउर हमनी खातिर क़ुर्बान भइलन।

ओही बखत बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरा के सामने टँगल परदा ऊपर से नीचे तक दू हिस्सा में फट गइल।

ज़लज़ला आ गइल।

चट्टान फट गइल।

क़ब्र खुल गइल।

कई मरहूम मुक़द्दसीन फेर ज़िंदा हो गइलन।

ऊ लोग हज़रत ईसा अल-मसीह के जी उठला के बाद क़ब्र से निकल के मुक़द्दस शहर में गइल अउर बहुत लोग उनकरा के देखलस।

जब रोमी अफ़सर अउर पहरा देवे वाला फ़ौजी लोगन ई सभ घटना देखलस, त ऊ लोग बहुत डर गइल।

ऊ लोगन कहे लागलन:

"ई वाक़ई अल्लाह के फ़रज़ंद रहलन।"

मतलब ई ना कि ऊ जिस्मानी तरीका से अल्लाह के बेटा रहलन, बल्कि ऊ रूहानी तरीका से अल्लाह के एगो ख़ास, पाक अउर बरगुज़ीदा शख्सियत रहलन, जे हमनी के गुनाह खातिर क़ुर्बानी बनलन।

अब आईं, हज़रत ईसा अल-मसीह के मौत के चार गो बड़ा असर पर बात कइल जाव।

पहिला असर:

बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरा के सामने टँगल परदा फट गइल।

मतलब अब हज़रत ईसा अल-मसीह के ज़रिए अल्लाह से सीधा ताल्लुक़ मुमकिन हो गइल।

जइसे ऊ खुद फरमवले रहलन:

"राह अउर हक़ अउर ज़िंदगी हमहीं बानी। हमार वसीला बिना केहू बाप के लगे ना जा सकेला।"

दूसरा असर:

उनकर मौत के समय ज़लज़ला आइल।

मतलब क़ुदरत भी पहचान गइल कि कुछ बहुत बड़ा हो रहल बा।

तीसरा असर:

कई नबी अउर नेक लोगन, जिनकर क़ब्र यरूशलेम में रहल, फेर ज़िंदा भइलन अउर हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में गवाही दिहलन।

चउथा असर:

ओह रोमी सिपाही, जे हज़रत ईसा अल-मसीह के सूली पर चढ़वले रहल, ऊ भी मान लिहलस कि हज़रत ईसा अल-मसीह अल्लाह के तरफ़ से भेजल एगो ख़ास इंसान रहलन।

आज जब रउआ ई वाक़िआ सुनत बानी, त रउआ लोगन के भी एगो मौका बा।

का रउआ अपना गुनाह से तौबा करके हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान ले आइब?

ऊ एकमात्र अइसन शख़्सियत रहलन जे कभी गुनाह ना कइलन।

उनकर पैदाइश बिना बाप के भइल, ताकि ऊ रूहानी तरीका से पाक रहसु।

एही से हज़रत याहया (अलैहिस्सलाम) फरमवले रहलन:

इंजील-ए-यूहन्ना (1:29)

"देखऽ, ई अल्लाह के लेला हवे, जे दुनिया के गुनाह उठा ले जाला।"

हज़रत ईसा अल-मसीह आजो रउआ के गुनाह धोवे चाहत बाड़न, ताकि रउआ अल्लाह के क़रीब आ सकीं।

बाकिर ई तबे हो सकेला जब रउआ दिल से तौबा करीं अउर हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान ले आईं।

का रउआ आज से उनकर सच्चा शागिर्द बने खातिर तैयार बानी?

उम्मीद बा कि रउआ उनकर सच्चा शागिर्द बनब।

## सबक – 6

हज़रत ईसा अल-मसीह हमनी के गुनाह खातिर मसलूब भइलन। बाकि ऊ मुर्दा ना रहलन। असल बात त ई बा कि हज़रत ईसा अल-मसीह आजो ज़िंदा बाड़न। ऊ आसमान में अल्लाह तआला के लगे बइठल बाड़न अउर ओह दिन के इंतिज़ार करत बाड़न जब ऊ फेर से आईहें अउर पूरा दुनिया के हिसाब-किताब करीहें।

सोचीं, अगर हमनी के अल्लाह के हुज़ूरी में जाए के बा, त उहे हमनी के उहाँ ले जा सकेलें जे पहिले से उहाँ मौजूद होखसु।

आज हम रउआ लोगन के एगो वाक़िआ सुनावे जा रहल बानी। ई हज़रत ईसा अल-मसीह के दोबारा ज़िंदा होखे के वाक़िआ बा। ई इंजील शरीफ़ में मत्ती बाब 28 में लिखल बा।

हज़रत ईसा अल-मसीह एतना ताक़तवर बाड़न कि मौत के बाद भी फेर से ज़िंदा हो गइलन अउर अपना क़ब्र से बाहर निकल अइलन।

दुनिया में ना जाने कतना क़ब्र बा, अउर ओह में बहुत औलिया भी दफ़्न बाड़े। बाकि हज़रत ईसा अल-मसीह के क़ब्र खाली बा।

आईं, अब मत्ती (28:1-9) पढ़ल जाव।

इतवार के बिहान, सूरज उगे के समय, मरियम मग्दलीनी अउर दोसर मरियम क़ब्र देखे खातिर गइल रहली।

अचानक एगो ज़ोरदार ज़लज़ला आ गइल, काहे कि रब के एगो फ़रिश्ता आसमान से उतर के आइल अउर क़ब्र पर रखल पत्थर के हटा दिहलस। फेर ऊ ओह पत्थर पर बइठ गइल।

ओकर चेहरा बिजुरी जइसन चमकत रहल अउर ओकर कपड़ा बर्फ़ जइसन उज्जर रहल।

पहरेदार लोग एतना डर गइल कि काँपत-काँपत मुरदा जइसन हो गइल।

फ़रिश्ता औरत लोगन से कहलस:

"मत डरा। हम जानत बानी कि रउआ लोग ईसा के खोजत बानी, जे मसलूब भइल रहलन।

ऊ इहाँ नइखन। ऊ जी उठल बाड़न, जइसे ऊ खुद फरमवले रहलन। आईं, ऊ जगह देख लीं जहाँ ऊ रखल गइल रहलन।

अब जल्दी जाके उनकर शागिर्द लोगन के बता दीं कि ऊ जी उठल बाड़न अउर रउआ लोगन से पहिले गलील जइहें। उहाँ रउआ लोगन उनकरा के देखब।"

औरत लोगन जल्दी से क़ब्र से निकल गइल। ऊ लोग डेराइल भी रहल अउर बहुत खुश भी रहल। ऊ दौड़त-दौड़त शागिर्द लोगन के ई ख़बर सुनावे गइल।

रास्ता में अचानक हज़रत ईसा अल-मसीह उनकरा लोगन के मिल गइलन।

ऊ कहलन:

"सलाम।"

औरत लोगन उनकरा लगे आके उनकर गोड़ पकड़ लिहलस अउर सज्दा कइलस।

हज़रत ईसा अल-मसीह कहलन:

"मत डरा। जा के हमार भाई लोगन के बता दऽ कि ऊ गलील चल जास। उहाँ ऊ हमके देखी।"

एह वाक़िआ से हमनी के चार गो बड़ा सच्चाई पता चलेला।

पहिली सच्चाई:

हज़रत ईसा अल-मसीह मौत पर जीत हासिल करके मुर्दन में से जी उठलन।

तीन दिन बाद, उनकरा पर ईमान रखे वाली औरत लोगन उनकर क़ब्र पर गइल। ऊ रोवे खातिर गइल रहल, बाकिर उहाँ ऊ लोग हज़रत ईसा अल-मसीह के ज़िंदा देखलस।

हज़रत ईसा अल-मसीह मौत से भी ज़्यादा ताक़तवर बाड़न। एही से ऊ हमनी के हमेशा के ज़िंदगी, यानी जन्नत के ज़िंदगी दे सकेलें।

दूसरी सच्चाई:

फ़रिश्ता उनकर ज़िंदा होखे के ख़बर सुनावे खातिर आइल रहल।

जइसे जब ऊ पैदा भइलन, त फ़रिश्ता लोग लोगन के ख़ुशख़बरी दिहलस, ओइसहीं जब ऊ जी उठलन, त फेर फ़रिश्ता क़ब्र पर आइल।

अल्लाह तआला चाहत रहलन कि सभे लोग जान जाव कि हज़रत ईसा अल-मसीह मौत पर फ़तह पा लिहले बाड़न।

आजो अगर केहू हमेशा के ज़िंदगी चाहेला, त ओकरा अपना गुनाह से तौबा करे के चाहीं अउर हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लावे के चाहीं।

तीसरी सच्चाई:

हज़रत ईसा अल-मसीह वादा कइले रहलन कि उनकर शागिर्द लोग उनकरा के देखी।

अउर सचमुच अइसहीं भइल।

गलील के एगो पहाड़ पर ग्यारह शागिर्द उनकरा के देखलस अउर उनकर सज्दा कइलस।

खाली शागिर्दे ना, बल्कि पाँच सौ से ज़्यादा लोग उनकरा के ज़िंदा देखलस।

एतना लोग गवाही दिहलस कि आज हमनी के पूरा यक़ीन बा कि हज़रत ईसा अल-मसीह के दोबारा ज़िंदा होखल साँच अउर हक़ीकत बा।

चउथी सच्चाई:

लोग हज़रत ईसा अल-मसीह के इबादत कइलस।

औरत लोगन सज्दा कइलस।

शागिर्द लोग सज्दा कइलस।

जब ऊ पैदा भइलन, त पूरब से नजूमी लोग आइल अउर उनकर सज्दा कइलस।

जब तूफ़ान शांत भइल, त शागिर्द लोग कहलस:

"यक़ीनन, रउआ अल्लाह के बेटे बानी।"

एह बात के मतलब ई ना कि ऊ अल्लाह के जिस्मानी बेटा रहलन, बल्कि रूहानी बेटा रहलन, यानी अल्लाह से बहुत ख़ास रिश्ता रखे वाला शख्सियत रहलन।

हमार अज़ीज़ भाई-बहिन लोगन,

हज़रत ईसा अल-मसीह के मक़ाम खाली एगो नबी से बढ़ के बा।

ऊ एगो कुँवारी से पैदा भइलन।

ऊ लंगड़ा लोग के ठीक कइलन।

अँधा लोग के रोशनी दिहलन।

मुर्दा लोगन के ज़िंदा कइलन।

अउर सबसे अहम बात, ऊ अपना जान हमनी के गुनाह खातिर क़ुर्बानी में दे दिहलन।

ऊ दफ़न भइलन।

बाकि फेर से ज़िंदा हो गइलन।

हज़रत ईसा अल-मसीह वाक़ई इबादत के लायक़ बाड़न।

हमार उम्मीद बा कि रउआ एह बातन से उनकर अज़मत के पहचान लिहले होखब।

अगर हँ, त ऊ आज रउआ के बुलावत बाड़न।

अपना गुनाह से तौबा करीं।

उनकरा पर ईमान ले आईं।

अउर उनकर शागिर्द बन जाईं।

अगिला तालीम "हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम" के बारे में होई।

एही से आगे भी ज़रूर पढ़त रहीं।

## सबक – 7

## हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ हुक्मन के खुलासा

पिछला तालीम में हमनी जाननी कि हज़रत ईसा अल-मसीह के हउवें। अब हम सीखब कि हज़रत ईसा अल-मसीह के पैरवी, यानी उनकर रास्ता कइसे अपनावल जाला।

आज से हम आठ गो ख़ास हुक्मन के तालीम शुरू करत बानी। एह लोग के हम कहिले बानी — हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम।

पिछला बेर हम सुननी कि हज़रत ईसा अल-मसीह के पैदाइश कतना ख़ास रहल। बहुत सारा नबी लोग उनकर आवे के पेशनगोई कइले रहल। फ़रिश्ता लोगन भी हज़रत मरियम (अलैहिस्सलाम) अउर दोसर लोगन के उनकर पैदाइश के ख़ुशख़बरी दिहलस।

हज़रत ईसा अल-मसीह एगो कुँवारी से पैदा भइलन। ऊ एह दुनिया में आइलन ताकि हमनी के गुनाह से निजात दे सकसु।

ऊ बीमार लोग के ठीक कइलन, मुर्दा लोग के ज़िंदा कइलन। ऊ एतना ताक़तवर बाड़न कि गुनाह माफ़ कर सकेलें अउर आदमी के दिल के राज भी जान सकेलें।

ऊ साफ़-साफ़ फरमवलन:

"राह अउर हक़ अउर ज़िंदगी हमहीं बानी। हमार वसीला बिना केहू बाप के लगे ना जा सकेला।"

अज़ीज़ भाई-बहिन लोग,

अगर हम अल्लाह से रिश्ता बनावे चाहत बानी, त हमनी के हज़रत ईसा अल-मसीह के बात सुने के अउर माने के ज़रूरत बा।

बाकि उनकर ज़िंदगी के सबसे बड़ा बात ई बा कि ऊ सूली पर अपना जान क़ुर्बान कइलन ताकि हमनी के गुनाह माफ़ हो सके।

ऊ दफ़न भइलन, अउर तीसरा दिन फेर ज़िंदा हो गइलन।

ऊ अपना क़ब्र से बाहर निकल अइलन अउर फेर आसमान पर चल गइलन।

अब ऊ अल्लाह के लगे बाड़न अउर क़ियामत के दिन फेर से आईहें।

एही से हमनी के उनकर हिदायतन के ध्यान से सुने के चाहीं अउर ओह पर अमल करे के चाहीं।

ऊ फरमवलन:

"अगर रउआ हमसे मौहब्बत करत बानी, त हमार अहकाम पर अमल करीं।"

हज़रत ईसा अल-मसीह बहुत सारा हिदायत दिहलन, बाकिर ई आठ गो अहकाम सबसे अहम मानल जाला।

तौबा करना अउर ईमान लाना।

पाक ग़ुस्ल यानी बपतिस्मा लेना।

दुआ करना।

इंजील शरीफ़ सीखना।

लोगन के शागिर्द बनाना।

मौहब्बत करना।

जमाअत में शामिल होना अउर इशा-ए-रब्बानी लेना।

सदक़ा-ज़कात देना।

अब आईं, थोड़ा-थोड़ा करके एह अहकामन के समझल जाव।

पहिला हुक्म: तौबा अउर ईमान

तौबा के मतलब बा — गलत रास्ता छोड़ के सही रास्ता पर आ जाना।

ईमान के मतलब बा — हज़रत ईसा अल-मसीह पर भरोसा करना।

सोचीं, अगर केहू गाड़ी चलावत होखे अउर ओकरा पता चले कि ऊ गलत दिशा में जा रहल बा, त ओकरा गाड़ी घुमावे के पड़ी।

एही के तौबा कहल जाला — गलत रास्ता छोड़ के सही रास्ता पकड़ लेना।

दूसरा हुक्म: पाक ग़ुस्ल

जब केहू हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान ले आवेला, त दोसर ईमानवाला लोग ओकरा के पानी में पूरा डुबाके पाक ग़ुस्ल देला।

ई एह बात के निशानी बा कि ऊ तौबा कइले बा अउर अब मसीह के पैरवीकार, यानी मसीह के माने वाला बन गइल बा।

तीसरा हुक्म: दुआ

दुआ के मतलब बा — अल्लाह से बात करना।

हज़रत ईसा अल-मसीह सिखवले कि हम कवनो भाषा में दुआ कर सकत बानी।

अल्लाह अपना बच्चन के आवाज़ सुने के पसंद करेलें।

चउथा हुक्म: इंजील शरीफ़ सीखना

इंजील शरीफ़ में हज़रत ईसा अल-मसीह के ज़िंदगी अउर उनकर तालीम लिखल बा।

एह किताब में हिकमत बा, सचाई बा अउर रौशनी बा।

अगर हम मसीह के शागिर्द बने चाहत बानी, त एह किताब के पढ़ल अउर समझल बहुत ज़रूरी बा।

पाँचवाँ हुक्म: शागिर्द बनाना

जइसे अल्लाह हमनी के सिखावेलें, ओइसहीं हमनी के भी अपना दोस्त, घरवाला अउर पड़ोसी लोगन तक ई बात पहुँचावे के चाहीं।

हमनी के दोसर लोगन के भी सिखावे के चाहीं कि ऊ हज़रत ईसा अल-मसीह के पहिचान सके।

छठवाँ हुक्म: मौहब्बत

हज़रत ईसा अल-मसीह सिखवले कि सबसे बड़ा हुक्म ई बा:

अल्लाह से मौहब्बत करा अउर अपना पड़ोसी से मौहब्बत करा।

अगर हम अल्लाह से मौहब्बत करब, त हम उनकर बात मानी।

अगर हम आदमी से मौहब्बत करब, त हम ओकर भलाई चाहब।

सातवाँ हुक्म: जमाअत अउर इशा-ए-रब्बानी

जमाअत के मतलब बा ईमान वाले लोगन के एक साथ मिलल।

ऊ लोग हफ़्ता में कम से कम एक बेर मिलेला।

ऊ दुआ करेला, इंजील शरीफ़ पढ़ेला, इबादत करेला अउर इशा-ए-रब्बानी लेला।

ई खाना हमनी के याद दिलावेला कि हज़रत ईसा अल-मसीह हमनी के गुनाह खातिर सूली पर अपना जान दिहलन।

आठवाँ हुक्म: सदक़ा-ज़कात

अगर हम मसीह के पैरवीकार बानी, त हमनी के अपना माल में से दोसर लोगन के मदद करे के चाहीं।

अल्लाह हमनी के जे कुछ दिहले बाड़न, ओकरा में से ज़रूरतमंद लोगन के हिस्सा देवे के चाहीं।

मेरे अज़ीज़ो,

हम जानत बानी कि ई आठ गो अहकाम पहिला बेर सुनला पर थोड़ा ज़्यादा लग सकेला।

बाकि अगिला सबकन में हम एक-एक हुकुम के आराम से समझब अउर इंजील शरीफ़ से ओकर मिसाल भी देखब।

बस ई बात याद रखीं:

खाली जान लेना काफ़ी ना होला।

जब हम एह हुक्मन पर अमल करिले, त हमार ज़िंदगी बदल जाला।

## सबक – 8

## हज़रत ईसा अल-मसीह के पहिला हुक्म — तौबा करना अउर ईमान लाना

---

हज़रत ईसा अल-मसीह के राह पर चले के पहिला कदम बा — तौबा करना अउर ईमान लाना।

जब हज़रत याहया (अलैहिस्सलाम) अपना ख़िदमत शुरू कइलन, त ऊ फरमवलन:

"तौबा करा, काहे कि आसमान के बादशाही क़रीब आ गइल बा।"

एह पैग़ाम में ऊ ऐलान करत रहलन कि हज़रत ईसा अल-मसीह ही आसमान के बादशाह बाड़न, जे दुनिया में आइल बाड़न।

एही से हर आदमी के चाहीं कि ऊ अपना ज़िंदगी उनकरा के सौंप दे।

जब हज़रत ईसा अल-मसीह अपना ख़िदमत शुरू कइलन, त ऊ भी एही पैग़ाम सुनवले:

"तौबा करा, काहे कि आसमान के बादशाही क़रीब आ गइल बा।"

आजो जब हम हज़रत ईसा अल-मसीह के पैग़ाम सुनिले, त हमनी के तौबा करे के चाहीं अउर अपना ज़िंदगी अल्लाह के सौंप देवे के चाहीं।

ई बात याद रखीं कि तौबा अउर ईमान एक-दूसरा से अलग ना हो सकेला।

तौबा के मतलब बा — पुरान गलत रास्ता छोड़ देना।

ईमान के मतलब बा — हज़रत ईसा अल-मसीह के ओर मुड़ना अउर उनकरा पर पूरा भरोसा करना।

उहे इबादत के लायक़ बाड़न।

उहे हमनी के गुनाह खातिर सूली पर अपना जान दिहलन।

उहे क़ब्र से फेर ज़िंदा भइलन।

उहे क़ियामत के दिन पूरा दुनिया के हिसाब लीहें।

आईं, अब इंजील शरीफ़ में लूका बाब 19 के ई वाक़िआ पढ़ल जाव।

फेर ईसा यरीहू शहर में दाख़िल भइलन अउर शहर से गुज़रत रहलन।

ओह शहर में ज़क्काई नाम के एगो अमीर आदमी रहत रहल। ऊ टैक्स लेवे वाला लोग के अफ़सर रहल।

ऊ जानल चाहत रहल कि ईसा के हउवें, बाकिर बहुत कोशिश करे के बावजूद ऊ उनकरा के देख ना सकल, काहे कि बहुत भीड़ रहल अउर ज़क्काई के कद छोट रहल।

एही से ऊ दौड़ के आगे गइल अउर रास्ता किनारे एगो अंजीर-तूत के पेड़ पर चढ़ गइल, ताकि हज़रत ईसा अल-मसीह के देख सके।

जब हज़रत ईसा अल-मसीह ओहिजा पहुँचलन, त ऊपर देख के कहलन:

"ज़क्काई, जल्दी नीचे उतर आ, काहे कि आज हमके तोहरा घर में ठहरे के बा।"

ज़क्काई फटाफट नीचे उतर आइल अउर बहुत खुशी से उनकर मेहमान-नवाज़ी कइलस।

ई देख के बाकी लोगन बड़बड़ाये लागल:

"देखऽ, ई त एगो गुनहगार आदमी के घर मेहमान बन गइल बाड़न।"

बाकि ज़क्काई खड़ा होके ख़ुदावंद से कहलस:

"ख़ुदावंद, हम अपना माल के आधा हिस्सा ग़रीब लोग के दे देत बानी।

अउर अगर हम केहू से नाजायज़ तरीका से कुछ लिहले बानी, त ओकरा चार गुना वापस करब।"

तब हज़रत ईसा अल-मसीह कहलन:

"आज एह घराना के नजात मिल गइल बा, काहे कि ई भी इब्राहीम के बेटा हवे।

काहे कि इब्ने-आदम गुमशुदा लोगन के खोजे अउर नजात देवे खातिर आइल बा।"

हमार अज़ीज़ भाई-बहिन लोग,

एह वाक़िआ में तीन गो अहम बात बा।

पहिली बात:

ज़क्काई गुनहगार रहल।

ऊ लालची रहल अउर लोगन से ज़्यादा पैसा लेत रहल।

दूसरी बात:

हज़रत ईसा अल-मसीह ओकरा से मौहब्बत कइलन।

ऊ ओकर नाम लेके बुलवलन अउर ओकर घर गइलन।

तीसरी बात:

ज़क्काई तौबा कइलस अउर ईमान ले आइल।

ऊ वादा कइलस कि अपना दौलत के बड़ा हिस्सा ग़रीब लोगन के दी अउर जे कुछ गलत तरीका से लिहले बा, ओकरा चार गुना वापस करी।

अब सोचीं,

एगो लालची आदमी एतना दरियादिल कइसे बन गइल?

ई हज़रत ईसा अल-मसीह के ताक़त हवे।

एही तरह हमनी के भी करे के बा।

जब हम हज़रत ईसा अल-मसीह के राह पर चले चाहिले, त हमनी के अपना पुरान गुनाह छोड़ के उनकरा तरफ़ मुड़े के पड़ी।

गुनाह कई तरह के होला।

जइसे:

लालच,

झूठ,

चोरी,

शराब,

ज़िना यानी बदकारी,

ग़ुस्सा,

अउर ज़ुल्म।

ज़क्काई लालच में फँसल रहल।

अब रउआ खुद सोचीं—

रउआ कवन गुनाह में फँसल बानी?

जइसे ज़क्काई अपना गलत रास्ता छोड़ के हज़रत ईसा अल-मसीह के राह पकड़ लिहलस, ओइसहीं आज रउआ के भी तौबा करे के चाहीं अउर ईमान ले आवे के चाहीं।

उम्मीद बा कि रउआ तौबा करके ईमान ले आइल होखब।

## सबक – 9

## ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के दूसरा हुक्म — पाक ग़ुस्ल लेना, जेकरा के बपतिस्मा भी कहल जाला

आज हम दूसरा हुक्म सीखब, जे हमार ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह दिहलन। ई हुक्म बा — पाक ग़ुस्ल लेना, यानी बपतिस्मा लेना।

जब हम तौबा करके अपना गुनाह छोड़ देत बानी अउर ईमान ले आवत बानी, तब हम बपतिस्मा लेत बानी।

ई एह बात के निशानी बा कि हम दिल से तौबा कइनी अउर ईमान ले आइल बानी।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पीछे चले खातिर ई बहुत अहम कदम बा।

आज हम इंजील शरीफ़ से एगो वाक़िआ देखब — आमाल 8:26-38।

एह वाक़िआ में अल्लाह अपना एगो बंदा, हज़रत फ़िलिप्पुस के भेजलन, ताकि ऊ एगो दोसर आदमी के ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के शागिर्द बना सकसु।

**एक दिन रब के फ़रिश्ता फ़िलिप्पुस से कहलस:**

**"उठ अउर दक्खिन दिशा में ओह रास्ता पर जा, जे यरूशलम से ग़ज़्ज़ा जात बा अउर रेगिस्तान से होके गुजरत बा।"**

**फ़िलिप्पुस उठलन अउर चल पड़लन।**

**रास्ता में उनकर मुलाक़ात इथोपिया, यानी मुल्के हब्शा के मलिका कंदाके के एगो ख़्वाजासरा से भइल।**

**ऊ मलिका के पूरा ख़ज़ाना के जिम्मेदार रहल अउर इबादत करे खातिर यरूशलम गइल रहल।**

**अब ऊ अपना देस लौटत रहल अउर रथ पर बइठ के हज़रत यसायाह (अलैहिस्सलाम) के सहीफा पढ़त रहल।**

**रूहुल-क़ुद्स फ़िलिप्पुस से कहलस:**

**"जा, ओह रथ के लगे पहुँच जा।"**

**फ़िलिप्पुस दौड़ के रथ के लगे पहुँचलन अउर सुनलन कि ऊ हज़रत यसायाह (अलैहिस्सलाम) के किताब पढ़त बा।**

**फ़िलिप्पुस पूछलन:**

**"का रउआ समझत बानी कि रउआ का पढ़त बानी?"**

**ख़्वाजासरा जवाब दिहलस:**

**"जबले केहू हमार राहनुमाई ना करी, तबले हम कइसे समझब?"**

**फेर ऊ फ़िलिप्पुस के रथ पर बइठे के निमंत्रण दिहलस।**

**ऊ किताब में ई हिस्सा पढ़त रहल:**

**"उकरा के भेड़ जइसन ज़बह करे खातिर ले गइल।**

**जइसे लेला ऊन कतरइया के सामने चुप रहेला,**

**ओइसहीं ऊ अपना मुँह ना खोललस।**

**ओकर बेइज़्ज़ती कइल गइल अउर ओकरा के इनसाफ़ ना मिलल।**

**के ओकर नस्ल के बयान कर सकेला?**

**काहे कि ओकर जान धरती से उठा लिहल गइल।"**

**तब ख़्वाजासरा फ़िलिप्पुस से पूछलस:**

**"मेहरबानी करके बताईं कि नबी एहिजा केकरा बारे में कहत बाड़न? अपना बारे में कि कवनो दोसर आदमी के बारे में?"**

**तब फ़िलिप्पुस एह कलाम से शुरुआत करके ओकरा के ईसा के बारे में ख़ुशख़बरी सुनवलन।**

**रास्ता में चलते-चलते ऊ लोग एगो जगह पहुँचल जहाँ पानी रहल।**

**ख़्वाजासरा कहलस:**

**"देखीं, इहाँ पानी बा। अब हमके बपतिस्मा लेवे से का चीज़ रोक सकेला?"**

**फ़िलिप्पुस कहलन:**

**"अगर रउआ पूरा दिल से ईमान ले आवत बानी, त ले सकत बानी।"**

**ऊ जवाब दिहलस:**

**"हम ईमान रखत बानी कि ईसा मसीह अल्लाह के फ़रज़ंद बाड़न।"**

**फेर ऊ रथ रुकववलस।**

**दूनो आदमी पानी में उतर गइलन अउर फ़िलिप्पुस ओकरा के बपतिस्मा दिहलन।**

एह वाक़िआ से हम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में का सीखत बानी?

सबसे पहिले, हम देखत बानी कि दोसर पैग़म्बर लोग भी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में पेशनगोई कइले रहल।

ख़्वाजासरा हज़रत यसायाह (अलैहिस्सलाम) के सहीफा पढ़त रहल, जहाँ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के क़ुर्बानी के बारे में लिखल रहल।

ई उनकर अहमियत के दिखावेला।

बहुत सारा पैग़म्बर लोग उनकर बारे में बात कइले रहल।

असल में किताब-ए-मुक़द्दस में तीन सौ से ज़्यादा पेशनगोई मिलेला, जे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के आवे से पहिले लिखल गइल रहल।

हम ई भी देखत बानी कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह सच खोजे वाला लोग के अपना लगे ले आवे सकत बाड़न।

ई ख़्वाजासरा अकेले रेगिस्तान में रहल।

ओकरा लगे केहू सिखावे वाला ना रहल।

बाकि अल्लाह ओकरा के देखत रहलन।

एही से अल्लाह अपना रसूल फ़िलिप्पुस के ओकरा लगे भेजलन।

एहिजा हम अल्लाह के अज़मत देखत बानी।

ऊ सभ कुछ जानेलें अउर सच्चे मन से खोजे वाला लोगन के अपना लगे ले आवेलें।

अब हम लोग के बारे में का सीखत बानी?

ई हब्शी ख़्वाजासरा हमनी खातिर हौसला-अफ़ज़ाई के नमूना बा।

ऊ अइसन देस में रहत रहल जहाँ लोग सच्चा ख़ुदा के इबादत ना करत रहल।

बाकि ऊ सच के खोज में रहल।

ऊ एतना गंभीर रहल कि हज़ारों मील के सफर करके यरूशलम पहुँचल।

ओहिजा ओकरा के ख़ुदा के कलाम मिलल।

ऊ पढ़त रहल, बाकिर समझ ना पावत रहल।

आज भी बहुत लोग एह हब्शी ख़्वाजासरा जइसन ख़ुदा के खोजत बा।

हमार उम्मीद बा कि रउआ भी ओह लोग में शामिल होखब।

अगर रउआ सच के खोजत बानी, त हमार उम्मीद बा कि रउआ भी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवी करे खातिर तैयार होखब।

अब फ़िलिप्पुस अउर हब्शी ख़्वाजासरा से हम का सीखत बानी?

फ़िलिप्पुस हर हाल में अल्लाह के फरमाबरदारी करे खातिर तैयार रहलन।

जब फ़रिश्ता उनकरा से शहर छोड़ के रेगिस्तान जाए के कहलस, त ऊ सवाल ना कइलन।

ऊ तुरन्त फरमाबरदारी कइलन।

फेर जब रूहुल-क़ुद्स कहलस:

"ओह रथ के लगे जा।"

त ऊ फेर तुरन्त चल पड़लन।

हालाँकि ई ख़तरनाक काम भी हो सकत रहल, काहे कि ख़्वाजासरा एगो ताक़तवर अउर दौलतमंद आदमी रहल।

बाकि फ़िलिप्पुस डेराइल ना।

ओइसहीं हमनी के भी हर हाल में अल्लाह के फरमाबरदारी करे खातिर तैयार रहे के चाहीं।

जब फ़िलिप्पुस के मौका मिलल, त ऊ फ़ौरन ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में बतवलन।

हमनी के भी दूसर लोग के सिखावे खातिर तैयार रहे के चाहीं।

हब्शी ख़्वाजासरा सच के खोज अउर फरमाबरदारी के सुंदर मिसाल बा।

ऊ हज़ारों मील सफर कइलस।

ऊ मेहनत से कलाम पढ़लस।

ऊ सीखे खातिर तैयार रहल।

जब ओकरा सच मिलल, त ऊ तुरन्त तौबा कइलस अउर ईमान ले आइल।

ऊ कहलस:

"देखीं, इहाँ पानी बा। अब हमके बपतिस्मा लेवे से का चीज़ रोक सकेला?"

अब पाक ग़ुस्ल, यानी बपतिस्मा के बारे में सीखल जाव।

का रउआ तौबा कइले बानी अउर हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान ले आइल बानी?

अगर हँ, त रउआ के भी बपतिस्मा में उनकर पैरवी करे के चाहीं।

बपतिस्मा एगो ख़ास तरह के पाक ग़ुस्ल बा।

जब केहू हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान ले आवेला, त एगो दोसर ईमानवाला ओकरा के पानी में पूरा डुबो देला।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह एतना ताक़तवर बाड़न कि बपतिस्मा ज़िंदगी में खाली एक बेर लेवे के ज़रूरत पड़ेला।

बपतिस्मा में हम उनकर फ़ज़ल अउर ताक़त से पाक हो जात बानी।

बपतिस्मा के ज़रिए हम ख़ुदा के लोगन में शामिल हो जात बानी।

इंजील शरीफ़, रोमियों बाब 6 में बपतिस्मा के रूहानी मतलब समझावल गइल बा:

"का रउआ ना जानत बानी कि हम सभे, जे बपतिस्मा पवनी, मसीह ईसा के मौत में शामिल हो गइल बानी?

बपतिस्मा के ज़रिए हम उनकर मौत में दफ़न भइल बानी, ताकि जइसे मसीह अल्लाह के जलाली क़ुदरत से मुर्दन में से ज़िंदा भइलन, ओइसहीं हमनी भी नया ज़िंदगी बिताईं।

अगर हम उनकर मौत में उनकरा साथ जुड़ल बानी, त हम उनकर जी उठला में भी उनकरा साथ जुड़ल रहब।"

ई हिस्सा बपतिस्मा के रूहानी मतलब सिखावेला।

जब हम पानी के नीचे जात बानी, त ई पुरान ज़िंदगी से मर जाए के निशानी हवे।

जइसे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह मरलन अउर दफ़न भइलन, ओइसहीं हम अपना पुरान गुनाह भरा ज़िंदगी के पीछे छोड़ देत बानी।

फेर जब हम पानी से बाहर निकलत बानी, त हमके नया ज़िंदगी मिलेला।

जइसे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह मुर्दन में से जी उठलन, ओइसहीं हम नई ज़िंदगी में प्रवेश करत बानी।

अगर रउआ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ नई ज़िंदगी चाहत बानी, त रउआ के बपतिस्मा में उनकर फरमाबरदारी करे के चाहीं।

## सबक – 10

## ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के तीसरा हुक्म — दुआ करना

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के तीसरा हुक्म बा कि हम दुआ करीं।

पहिला दू हुक्म रहल — तौबा करना, ईमान लाना, अउर पाक ग़ुस्ल यानी बपतिस्मा लेना। अब एह सबक में हम सीखब कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के साथ चलते हुए हमनी के आगे कइसे बढ़े के बा।

आगे बढ़े खातिर हमनी के दुआ करे के पड़ी अउर इंजील शरीफ़ पढ़े के पड़ी। अगिला हुक्म इंजील शरीफ़ सीखे के बारे में होई।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह बहुत अज़ीम बाड़न, एही से हमनी के उनकर हुक्म पर ध्यान से अमल करे के चाहीं।

ऊ अपना शागिर्द लोग से फरमवलन:

"अगर रउआ हमसे मौहब्बत करत बानी, त हमार अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारीं।"
यूहन्ना 14:15

याद करीं, उहे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह बीमार लोग के ठीक कइलन, मुर्दा लोग के ज़िंदा कइलन। ऊ हमनी के गुनाह खातिर सूली पर अपना जान दिहलन। ऊ दफ़्न भइलन अउर तीसरा दिन ज़िंदा हो गइलन।

वाक़ई, उनकर अहकाम अमल करे लायक़ बा।

आज के सबक दुआ के बारे में बा, जे मत्ती बाब 6, आयत 5 से 15 में लिखल बा। उहाँ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह अपना शागिर्द लोग के दुआ करे के तरीका सिखवलन।

ऊ फरमवलन:

**"दुआ करत समय रियाकार लोगन के जइसन मत करा, जे इबादतख़ाना अउर चौक में खड़ा होके दुआ करे पसंद करेलें, ताकि लोगन उनकरा के देखे।**

**हम रउआ से सच कहत बानी, जे अज्र उनकरा मिले के रहल, ऊ मिल चुकल बा।**

**बाकिर जब तू दुआ करऽ, त अपना अंदर के कमरा में जा, दरवाज़ा बंद कर अउर अपना बाप से दुआ कर, जे पोशीदगी में बा।**

**फेर तोहार बाप, जे पोशीदा बात देखेला, तोहरा के ओकर मुआवज़ा दी।**

**दुआ करत समय ग़ैरयहूदी लोगन जइसन लंबा-लंबा अउर बेमानी बात बार-बार मत दोहरावऽ।**

**ऊ लोग समझेला कि बहुत बात बोलला से उनकर दुआ सुनल जाई।**

**ओह लोगन जइसन मत बनऽ, काहे कि तोहार बाप तोहार ज़रूरत पहिले से जानेला।**

**बल्कि एह तरीका से दुआ करा:**

**ऐ हमनी के आसमानी बाप,**

**तोहार नाम मुक़द्दस मानल जाव।**

**तोहार बादशाही आवे।**

**तोहार मरज़ी जइसे आसमान में पूरा होला, ओइसहीं ज़मीन पर भी पूरा होखे।**

**हमनी के रोज़ के रोटी आज हमनी के दे।**

**हमनी के गुनाह माफ़ कर,**

**जइसे हमहूँ ओह लो ग के माफ़ कइनी,**

**जे हमनी के खिलाफ़ गुनाह कइले बा।**

**हमनी के आज़माइश में मत पड़ने दे,**

**बल्कि हमनी के इबलीस से बचा के रख।**

**काहे कि बादशाही, क़ुदरत अउर जलाल हमेशा तोहरे बा।**

**आमीन।"**

**काहे कि अगर रउआ लोग दोसर लोग के गुनाह माफ़ करब, त रउआ के आसमानी बाप भी रउआ के माफ़ करी।**

**बाकिर अगर रउआ लोग दोसर लोग के माफ़ ना करब, त रउआ बाप भी रउआ के गुनाह माफ़ ना करी।**

अब हम एह तालीम से ख़ुदा के बारे में का सीखत बानी?

सबसे पहिले, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमनी के सिखवलन कि ख़ुदा से अइसन दुआ करा जइसे अपना बाप से बात करत बानी।

ई बहुत बड़ी बात बा कि हम ख़ुदा के अपना बाप कह सकेनी।

ऊ सबसे अच्छा बाप बाड़न, काहे कि ऊ रहमत वाला अउर ताक़तवर बाड़न।

ऊ हमनी के आसमानी बाप बाड़न, जे हमनी से हमनी के दुनियावी बाप से भी ज़्यादा मौहब्बत करेलें।

कभी-कभी "बाप" के मतलब लोग गलत समझ लेला।

कुछ लोग कहेला कि मसीही लोगन मानेला कि ख़ुदा बीवी लिहलन अउर बच्चा पैदा कइलन।

अस्तग़फ़िरुल्लाह! ई कुफ़्र बा।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के कवनो सच्चा मानने वाला ई बात ना मानेला।

ना ही हम ई मानत बानी कि ख़ुदा कभी जिस्मानी बेटा पैदा कइलन।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैदाइश अलग अउर मोजिज़ाती रहल।

ऊ ख़ुदा के रूहानी बेटे रहलन, जिस्मानी ना।

जब हम ख़ुदा के बाप कहिले, त ओकर मतलब ई होला कि ऊ अपना बंदन से बाप जइसन मौहब्बत करेलें।

बाकिर उनकर मौहब्बत दुनियावी बाप से भी ज़्यादा पाक अउर बेहतर बा, काहे कि दुनियावी बाप गुनहगार हो सकेलें।

हमार आसमानी बाप हमनी के गुनाह माफ़ करेलें अउर हमनी के ज़रूरत पूरा करेलें।

एह तालीम से हम ख़ुदा के बारे में अउरी का सीखत बानी?

ख़ुदा रियाकारी, यानी दिखावा अउर ढोंग से नफ़रत करेलें।

रियाकार लोग बाहर से देखावेला कि ऊ बहुत अच्छा बा, बाकिर उनकर दिल ख़ुदा से दूर रहेला।

ख़ुदा के अइसन मज़हब पसंद नइखे।

ऊ चाहेलें कि लोग दिल से उनकरा से मौहब्बत करे।

एही से हमनी के अंदर से बदले के बा, ताकि हम ख़ुदा के क़रीब हो सकीं।

अब हम दुआ के दू गो गलत तरीका देखत बानी।

पहिला गलत तरीका ई बा कि कुछ रियाकार लोगन ख़ुदा खातिर ना, बल्कि लोगन के दिखावे खातिर दुआ करेला।

जइसे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह फरमवलन:

"रियाकार लोगन इबादतख़ाना अउर चौक में खड़ा होके दुआ करे पसंद करेलें, ताकि लोगन उनकरा के देखे।"

अगर केहू खाली लोगन के दिखावे खातिर दुआ करेला, त ओकर दुआ ख़ुदा के पसंद ना आवेला।

सही तरीका ई बा कि अकेले में दुआ कइल जाव।

तब दुआ के असली इनाम मिली — ख़ुदा के साथ मज़बूत रिश्ता।

दूसरा गलत तरीका ई बा कि लोग लंबा-लंबा अउर बेमानी बात बार-बार दोहरावेला अउर सोचेला कि ज़्यादा बोले से दुआ सुनल जाई।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओह लोगन के बारे में बात करत रहलन जे खास तरह के दुआएँ पढ़त रहलन अउर सोचत रहलन कि एह अल्फ़ाज़ में अपने आप कवनो ताक़त बा।

बहुत लोगन अइसन दुआ याद करेला जे कवनो अउरी ज़ुबान में होला, अउर ऊ ओकर मतलब भी ना समझेला।

ऊ सोचेला कि ख़ुदा एही चाहेलें।

बाकिर अगर ख़ुदा हमनी के आसमानी बाप बाड़न, त ऊ काहे चाहीहें कि उनकर बच्चा अजनबी ज़ुबान में लंबा-लंबा अउर बेमानी बात दोहरावत रहे, जे ऊ खुदो ना समझे?

ई सही तरीका नइखे।

सही दुआ ई बा कि हम अपना दिल ख़ुदा के सामने खोल दीं अउर उनकरा से अइसन बात करीं जइसे अपना बाप से बात करिले।

ऊ अपना बच्चन के असली आवाज़ सुने चाहेलें।

त ख़ुदा चाहेलें कि हम कइसे दुआ करीं?

बहुत आसान बा।

हमनी के अइसन दुआ करे के चाहीं जइसे बच्चा अपना बाप से बात करेला।

अपना ज़रूरत ख़ुदा के बताईं।

अपना दिल के बात कहीं।

ऊ सुनत बाड़न।

ऊ रउआ के परवाह करेलें।

कुछ लोग पूछेला:

"कतना बेर दुआ करे के चाहीं?"

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह कवनो खास गिनती के हुक्म ना दिहलन।

बल्कि ऊ ख़ुदा के साथ रिश्ता पर ज़ोर दिहलन।

ऊ सिखवलन कि दुआ के मक़सद ख़ुदा के क़रीब होखल बा।

एगो बच्चा अपना प्यारा बाप से कतना बेर बात करे चाहेला?

जतना बेर ओकर मन करे।

ओइसहीं हमनी के भी दुआ करे के चाहीं।

शुरुआत सुबह उठ के करीं अउर रात में सोवे से पहिले दुआ करीं।

फेर धीरे-धीरे दिन में भी बार-बार दुआ करत रहीं।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ई भी सिखवलन कि दुआ खातिर कवनो खास जगह ज़रूरी नइखे, कवनो खास समय ज़रूरी नइखे।

ऊ कवनो रस्म ना दिहलन।

बाकि ई नमूना-दुआ हमनी खातिर मददगार बा।

अगर रउआ के दुआ करे ना आवत होखे, त एह दुआ से शुरुआत करीं।

फेर अपना अल्फ़ाज़ में, अपना ज़ुबान में ख़ुदा से बात करीं।

आईं, अब ई दुआ फेर से करीं। ओकरा बाद अपना-अपना अल्फ़ाज़ में अपना आसमानी बाप से दुआ करीं।

हे हमनी के बाप, जे आसमान पर बाड़न,

तोहार नाम पाक मानल जाव।

तोहार बादशाही आवे।

तोहार मरज़ी ज़मीन पर ओइसहीं पूरा होखे, जइसे आसमान में होला।

आज हमनी के रोज़ के रोटी दे।

हमनी के गुनाह माफ़ कर,

जइसे हमहूँ अपना गुनहगारन के माफ़ कइनी।

हमनी के आज़माइश में मत डाल,

बल्कि हमनी के बुराई से बचा।

हमनी के गुनाह माफ़ कर,

जइसे हम अपना गुनहगारन के माफ़ कइनी।

हमनी के आज़माइश में मत पड़ने दे,

बल्कि हमनी के इबलीस से बचा के रख।

आमीन।

उम्मीद बा कि आज रउआ दुआ के तरीका सीख लिहले होखब।

ख़ुदा से मज़बूत रिश्ता बनावे खातिर हमनी के ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के हुक्म पर अमल करत दुआ करे के चाहीं।

## सबक – 11

## ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के चउथा हुक्म — इंजील शरीफ़ सीखना, यानी किताब-ए-मुक़द्दस सीखना

पिछला सबक में हमनी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह से दुआ अउर ओकर तरीका के बारे में सीखनी। एह सबक में हम अउरी सीखब कि हमनी के रूहानी ज़िंदगी कइसे मज़बूत होई। ई सबक बा — इंजील शरीफ़ से सीखना यानी किताब-ए-मुक़द्दस सीखना।

दुआ करना अउर ख़ुदा के कलाम पढ़ना — ई दुनो हमनी के रूहानी ज़िंदगी के मज़बूती खातिर बहुत ज़रूरी बा।

एह सबक में ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह फरमावेलें कि ख़ुदा के कलाम इंसान खातिर खाना से भी ज़्यादा ज़रूरी बा।

सोचीं, अगर कवनो आदमी एक दिन खाना ना खाए, त ओकरा भूख लगी। अगर कई दिन ना खाए, त ऊ कमज़ोर हो जाई। अउर अगर अइसहीं चलत रहे, त आखिरकार ऊ मर जाई।

ओइसहीं अगर हम ख़ुदा के कलाम ना सीखीं, त हमनी के रूहानी ज़िंदगी भी कमज़ोर हो जाई, अउर धीरे-धीरे मर जाई।

आज हम मत्ती 4:1-11 से ऊ वाक़िआ पढ़ब, जब शैतान ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के आज़मवलस। एहिजा हम देखब कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ख़ुदा के कलाम से शैतान पर जीत कइसे हासिल कइलन।

अगर ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह खातिर ख़ुदा के कलाम जानल ज़रूरी रहल, त हमनी खातिर त अउरी ज़्यादा ज़रूरी बा।

**फेर रूहुल-क़ुद्स ईसा के रेगिस्तान में ले गइल, ताकि इबलीस उनकरा के आज़मावे।**

**चालीस दिन अउर चालीस रात रोज़ा रखला के बाद आखिरकार उनकरा भूख लागल।**

**फेर आज़मावे वाला उनकरा लगे आके कहे लागल:**

**"अगर तू अल्लाह के फ़रज़ंद हउआ, त एह पत्थरन के हुक्म दे कि ई रोटी बन जाव।"**

**बाकि ईसा जवाब दिहलन:**

**"हरगिज़ ना, काहे कि कलामे-मुक़द्दस में लिखल बा कि इंसान के ज़िंदगी खाली रोटी पर मुनहसिर ना होला, बल्कि हर ओह बात पर होला जे रब के मुँह से निकलत बा।"**

**एह पर इबलीस उनकरा के मुक़द्दस शहर यरूशलम ले गइल अउर बैतुल-मुक़द्दस के सबसे ऊँच जगह पर खड़ा कइलस।**

**फेर कहे लागल:**

**"अगर तू अल्लाह के फ़रज़ंद हउआ, त इहाँ से नीचे कूद जा। काहे कि कलामे-मुक़द्दस में लिखल बा:**

**'ऊ तोहरा खातिर अपना फ़रिश्तन के हुक्म दीहें, अउर ऊ तोहरा के अपना हाथ पर उठा लीहें, ताकि तोहार गोड़ पत्थर से ना टकराए।'"**

**बाकि ईसा जवाब दिहलन:**

**"कलामे-मुक़द्दस ई भी फरमावेला: 'रब अपना ख़ुदा के मत आज़मावऽ।'"**

**फेर इबलीस उनकरा के एगो बहुत ऊँच पहाड़ पर ले गइल अउर दुनिया के तमाम मुमालिक अउर उनकर शानो-शौकत देखवलस।**

**ऊ कहलस:**

**"ई सभ कुछ हम तोहरा के दे देब, बस शर्त ई बा कि तू गिर के हमके सज्दा करऽ।"**

**बाकि ईसा तीसरी बेर इनकार करत कहलन:**

**"इबलीस, दफ़ा हो जा! काहे कि कलामे-मुक़द्दस में लिखल बा: 'रब अपना ख़ुदा के सज्दा कर अउर सिर्फ़ ओही के इबादत कर।'"**

**एह पर इबलीस उनकरा के छोड़ के चल गइल, अउर फ़रिश्ता लोग आके उनकर ख़िदमत करे लागल।**

एह वाक़िआ से हम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में का सीखत बानी?

सबसे पहिले, हम देखत बानी कि उनकर रोज़ा बहुत ताक़तवर रहल। ऊ चालीस दिन अउर चालीस रात रोज़ा रखलन। ऊ खाली दिन में ना, बल्कि रात में भी रोज़ा रखलन।

हम ई भी देखत बानी कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के ख़ुदा के कलाम के इल्म रहल।

तीन बेर ऊ तौरात शरीफ़ से, हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के किताब से हवाला दिहलन।

जब शैतान कहलस कि पत्थर से रोटी बना लीं, त मसीह फरमवलन:

"लिखल बा कि इंसान के ज़िंदगी खाली रोटी पर मुनहसिर ना होला, बल्कि हर ओह बात पर होला जे रब के मुँह से निकलत बा।"

जब शैतान कहलस कि अपना आप के यरूशलम के बैतुल-मुक़द्दस के चोटी से गिरा दीं, त मसीह फरमवलन:

"कलामे-मुक़द्दस ई भी फरमावेला: 'रब अपना ख़ुदा के मत आज़मावऽ।'"

आखिर में, जब शैतान ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह से कहलस कि हमके सज्दा करा, त मसीह फरमवलन:

"इबलीस, दफ़ा हो जा! काहे कि कलामे-मुक़द्दस में लिखल बा: ‘रब अपना ख़ुदा के सज्दा कर अउर सिर्फ़ ओही के इबादत करा।’"

ई तीनो हवाला तौरात शरीफ़ से रहल। यानी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओह किताब के गहराई से पढ़ले रहलन अउर जब ज़रूरत पड़ल, त ओकर तालीमात के बयान कइलन।

एह वाक़िआ में हम ई भी देखत बानी कि हालाँकि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के आज़मावल गइल, बाकि ऊ गुनाह ना कइलन।

हालाँकि ख़ुदा के कलाम कहेला:

"सब गुनाह कइले बा अउर ख़ुदा के जलाल से महरूम हो गइल बा।"
रोमियों 3:23

बाकि ई बात ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर लागू ना होला।

वजह ई बा कि उनकर ख़ास अउर रूहानी पैदाइश उनकरा के पूरी तरह पाक-साफ़ दुनिया में ले आइल।

ख़ुद शैतान भी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के गुनाह करावे में मजबूर ना कर सकल।

आखिर में हम देखत बानी कि शैतान दू बेर ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के "अल्लाह के फ़रज़ंद" कहलस।

ऊ कहलस:

"अगर तू अल्लाह के फ़रज़ंद हउआ, त एह पत्थरन के हुक्म दे कि ई रोटी बन जाव।"

फेर कहलस:

"अगर तू अल्लाह के फ़रज़ंद हउआ, त इहाँ से छलाँग लगा दे।"

ई ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के एगो ख़ास ल़क़ब बा कि ऊ ख़ुदा के बेटा बाड़न।

हम सभे ख़ुदा के औलाद बानी, बाकिर ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओह तरीका से ख़ुदा के बेटा बाड़न जे अउर केहू पर लागू ना होला।

जब हम कहिले कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ख़ुदा के बेटा बाड़न, त हमनी के ई ग़लतफ़हमी ना करे के चाहीं कि ऊ जिस्मानी बेटा बाड़न।

ख़ुदा कबहूँ बीवी ना लिहलन अउर ना इंसानन जइसन औलाद पैदा कइलन।

बल्कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ख़ुदा के रूहानी बेटे बाड़न।

अब एह वाक़िआ से हम शैतान के बारे में का सीखत बानी?

सबसे पहिले, हम देखत बानी कि शैतान आज़मावे वाला बा।

ऊ तीन बेर कोशिश कइलस कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के गुनाह में गिरा दे, बाकि ऊ नाकाम रहल।

हम जानत बानी कि शैतान ताक़तवर अउर बहुत अक़्लमंद बा।

ऊ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बैतुल-मुक़द्दस के चोटी पर अउर एगो ऊँच पहाड़ पर ले गइल।

बाकि अपना ताक़त के बावजूद, शैतान के ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के सामने से भागे के पड़ल।

ई जान लीं कि अगर रउआ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के क़रीब रहब, त शैतान अउर ओकर बुरी रूहे रउआ के नुक़सान ना पहुँचा सकीहें।

ई भी जान लीं कि एह दुनिया में हर इंसान पर आज़माइश आवेला।

कुछ लोग आज़माइश में गिर जाला, अउर कुछ लोग ख़ुदा के रास्ता पर क़ायम रहेला।

अगर हम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवीकार बने चाहत बानी, त आज़माइश आवे पर हमनी के गुनाह के ठुकरावे के पड़ी।

बाकि ई भी जान लीं कि जब हम नाकाम हो जाईं, तबो ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमनी से मौहब्बत करेलें।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवी करे खातिर रउआ के उनकर तालीमात पढ़े के पड़ी, ताकि रउआ आज़माइश अउर शैतान के मुक़ाबला में खड़ा रह सकीं।

हज़रत ईसा अल-मसीह के तालीमात इंजील शरीफ़ में मौजूद बा।

इंजील शरीफ़ 27 किताबन पर मुश्तमिल बा अउर कुल 260 बाब बा।

अगर रउआ रोज़ तीन बाब पढ़ीं, त खाली तीन महीना में पूरा इंजील शरीफ़ ख़त्म कर सकत बानी।

तीन बाब पढ़े में लगभग पंद्रह मिनट लागेला।

ई अमल रउआ रूहानी ज़िंदगी के बहुत मज़बूत कर दी।

सबसे अच्छा आग़ाज़ इंजील शरीफ़ के पहिली किताब से कइल जा सकेला, जेकरा के "इंजील मत्ती" कहल जाला।

अगर रउआ पढ़ ना सकत बानी, त ख़ुदा के कलाम सुनीं।

अपना मोबाइल में इंजील शरीफ़ के ऑडियो रिकॉर्डिंग रखीं अउर रोज़ सुनीं।

बार-बार सुनीं, अउर रउआ रूहानी ज़िंदगी बहुत तरक़्क़ी करी।

जइसे-जइसे रउआ इंजील शरीफ़ के तालीमात अउर दुआ में बढ़त जइब, ओइसहीं रउआ ख़ुदा के अउर क़रीब होत जइब।

## सबक – 12

## ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पाँचवाँ हुक्म —– जाईं अउर तमाम क़ौमन के शागिर्द बनाईं

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान रखे वाला हर आदमी के ज़िम्मेदारी बा कि ऊ दूसर लोग के ख़ुशख़बरी सुनावे, ताकि ऊ लोग भी शागिर्द बन सके।

जब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमनी के गुनाह खातिर सलीब पर अपना जान क़ुर्बान कइलन, फेर दफ़्न भइलन, अउर तीसरा दिन ज़िंदा भइलन, त ऊ अपना शागिर्द लोगन के हुक्म दिहलन:

**"एही से जाईं, तमाम क़ौमन के शागिर्द बनाईं अउर उनकरा के बाप, फ़रज़ंद अउर रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दीं।"**
**मत्ती 28:19**

एह हुक्म के मतलब ई बा कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह दुनिया के हर मुल्क, हर बिरादरी अउर हर क़ौम के लोग से मौहब्बत करेलें, अउर चाहेलें कि हर इंसान उनकर शागिर्द बने।

अब जब रउआ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान ले आइल बानी, त ऊ रउआ के भी इस्तेमाल करे चाहेलें, ताकि रउआ भी दूसर लोग के उनकर शागिर्द बना सकीं।

सबक शुरू करे से पहिले हम रउआ से एगो सवाल पूछे चाहत बानी।

रउआ के का लागेला कि ख़ुदा कइसन लोगन के इस्तेमाल करे चाहेलें, ताकि ऊ दूसर लोगन के मदद कर सके कि ऊ हज़रत ईसा अल-मसीह के रास्ता अपनावे?

अगर रउआ सोचत बानी कि ख़ुदा खाली बहुत पढ़ल-लिखल लोग, या बहुत नेक लोग के ही इस्तेमाल करीहें, त आज के सबक रउआ के हैरान कर दी।

काहे कि ख़ुदा आम अउर सीधा-सादा लोगन के भी बड़ा काम खातिर इस्तेमाल करेलें।

आज के सबक लंबा बा, एही से हम एकरा के हिस्सा-हिस्सा में समझब।

सबक शुरू करे से पहिले हमनी के बनी इस्राईल के बारे में जाने के चाहीं।

इस्राईल हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के एगो नाम रहल। एही से बनी इस्राईल ऊ क़ौम रहल जे हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के औलाद से आइल।

ई लोग हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के तालीमात अउर तौरात शरीफ़ के मानत रहल।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के ज़माना में बनी इस्राईल वाला लोग के अक्सर “यहूदी” कहल जात रहल।

“यहूदी” नाम हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के बेटा यहूदा से आइल बा।

आज के सबक हम यूहन्ना के इंजील बाब 4, आयत 5-30 अउर फेर 39-42 से पढ़ब।

**ओह बखत ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह सामरिया के इलाक़ा में रहलन।**

**ईसा सामरिया से गुज़र रहलन। चलते-चलते ऊ एगो शहर के लगे पहुँचलन, जेकर नाम सूख़ार रहल। ई ओह ज़मीन के क़रीब रहल, जे याक़ूब अपना बेटा यूसुफ़ के दिहले रहलन।**

**ओहिजा याक़ूब के कुआँ रहल।**

**ईसा सफर से थक गइल रहलन, एही से ऊ कुआँ पर बइठ गइलन। दोपहर के करीब बारह बज गइल रहल।**

**एगो सामरी औरत पानी भरे आइल।**

**ईसा ओकरा से कहलन:**

**"हमके ज़रा पानी पिला दऽ।"**

**उनकर शागिर्द लोग खाना खरीदे खातिर शहर गइल रहल।**

**सामरी औरत हैरान हो गइल, काहे कि यहूदी लोग सामरियन से ताल्लुक़ रखे से इनकार करत रहल।**

**ऊ कहलस:**

**"रउआ त यहूदी बानी, अउर हम सामरी औरत बानी। रउआ हमसे पानी कइसे माँग सकत बानी?"**

हमार ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह अपना ख़िदमत के दौर में हर बखत सफर करत रहलन अउर ख़ुदा के कलाम लोगन तक पहुँचावत रहलन।

ओह ज़माना में दू क़ौम आपस में नाराज़ अउर अलग-अलग रहत रहल — बनी इस्राईल अउर सामरी लोग।

ई दुनो क़ौमन के ज़ुबान, पहनावा, खाना-पीना अउर मज़हब अलग-अलग रहल।

एही से ज़्यादातर यहूदी अउर सामरी लोग आपस में बातो ना करत रहल।

बाकि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह सभ इंसान से मौहब्बत करेलें।

एही से बनी इस्राईल से होखला के बावजूद, ऊ सामरियन के लगे भी खुशी-खुशी गइलन।

रउआ ई बात अच्छा से जान लीं कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के ख़िदमत खाली एक क़ौम या एक मुल्क खातिर ना रहल।

उनकर ख़िदमत पूरा दुनिया के लोग खातिर रहल — हर ज़ुबान, हर क़ौम अउर हर इलाक़ा खातिर।

**ईसा जवाब दिहलन:**

**"अगर तू ओह बख़्शिश से वाक़िफ़ होतू, जे अल्लाह तोहरा के देवे चाहत बाड़न, अउर तू ई जानतू कि तोहरा से पानी के माँगत बा, त तू खुद ओह से माँगतू अउर ऊ तोहरा के ज़िंदगी के पानी देत।"**

**औरत कहलस:**

**"ख़ुदावंद, रउआ लगे त बालटी भी नइखे अउर ई कुआँ गहिरा बा। रउआ के ज़िंदगी के ई पानी कहाँ से मिली?**

**का रउआ हमनी के बाप याक़ूब से भी बड़ा बानी, जे हमनी के ई कुआँ दिहलन अउर खुद भी अपना बेटन अउर रेवड़न समेत एह पानी से लुत्फ़ उठवलन?"**

**ईसा जवाब दिहलन:**

**"जे केहू एह पानी में से पीई, ओकरा फेर प्यास लगी।**

**बाकि जे पानी हम देब, ऊ पी लेई त ओकरा फेर कबो प्यास ना लगी। बल्कि जे पानी हम ओकरा के देब, ऊ ओकरा भीतर एगो चश्मा बन जाई, जे अबदी ज़िंदगी खातिर पानी बहावत रही।"**

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह बातचीत के तुरंत रूहानी बातन के तरफ मोड़ दिहलन।

ऊ ओह औरत से कहलन कि ऊ ओकरा के “ज़िंदगी के पानी” दे सकेलें।

ऊ फरमवलन कि जे एह ज़िंदगी के पानी के पीई, ओकरा फेर कबो प्यास ना लगी, बल्कि ओकरा भीतर एगो सोता, यानी चश्मा फूट पड़ी, जे ओकरा के हमेशा के ज़िंदगी, यानी अबदी ज़िंदगी देत रही।

बेशक, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह इहाँ एगो मिसाल इस्तेमाल कइलन, ताकि नजात के हक़ीक़त समझावल जा सके।

उनकर मतलब ई रहल कि जे उनकरा लगे आई, ऊ ओकरा के रूहुल-क़ुद्स अउर अबदी ज़िंदगी अता करीहें।

बाकिर ऊ औरत ईसा अल-मसीह के ई रूहानी बात ना समझ सकल।

ओकरा ई बात खाली बाहर से पानी के बात लागल, जबकि असल में ईसा अल-मसीह ओकर दिल के प्यास अउर रूह के ज़रूरत के बात करत रहलन।

**औरत कहलस:**

**"ख़ुदावंद, हमके ई पानी पिला दीं। फेर हमके कबो प्यास ना लगी अउर बार-बार इहाँ पानी भरे ना आवे के पड़ी।"**

**ईसा कहलन:**

**"जा, अपना ख़ाविंद के बुला ला।"**

**औरत जवाब दिहलस:**

**"हमार कवनो ख़ाविंद नइखे।"**

**ईसा कहलन:**

**"तू ठीक कहलू कि हमार ख़ाविंद नइखे।**

**काहे कि तोहार शादी पाँच मरदन से हो चुकल बा, अउर जे आदमी के साथ तू अब रहत बाड़ू, ऊ तोहार शौहर नइखे। तोहार बात बिल्कुल सही बा।"**

**औरत कहलस:**

**"ख़ुदावंद, हम देखत बानी कि रउआ नबी बानी।**

**हमनी के बाप-दादा त एह पहाड़ पर इबादत करत रहलन, बाकि रउआ यहूदी लोग कहेला कि यरूशलम उहे मरकज़ बा जहाँ इबादत करे के चाहीं।"**

ऊ औरत ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह से कहलस कि ऊ ओकरा के ई "ज़िंदगी के पानी" दे देसु।

बाकि ऊ अभी भी एह बात के रूहानी मतलब ना समझ पावत रहल।

ज़िंदगी के पानी पावे से पहिले ओकर गुनाह ज़ाहिर होखल अउर ओकर हल होखल ज़रूरी रहल।

एही से ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओकरा से कहलन कि अपना शौहर के बुला लाव।

एह तरीका से ऊ ओकर ज़िना के गुनाह सामने ले अइलन।

फेर ऊ बता दिहलन कि उनकरा पहिले से मालूम रहल कि ओकर माज़ी गुनाह से भरल बा अउर ओकर कवनो शौहर नइखे।

ई औरत खातिर ई बात बहुत हैरान करे वाली रहल होई कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओकर गुनाह जानत रहलन, फेर भी ओकरा से बात करत रहलन।

फेर भी ऊ ओकर तौहीन ना कइलन, बल्कि प्यार अउर रहमत से ओकरा से बात कइलन।

ई बात सुन के औरत समझ गइल कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह नबी बाड़न।

तुरंत ऊ पूछलस कि इंसान ख़ुदा के क़रीब कइसे हो सकेला?

ऊ सोचत रहल कि का सामरियन के तरीका से इबादत करे के चाहीं, कि बनी इस्राईल के तरीका से।

एह जवाब में ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओकरा के ई हक़ीक़त बतवलन।

**ईसा जवाब दिहलन:**

**"ऐ ख़ातून, यक़ीन कर, ऊ वक़्त आई जब रउआ लोग ना त एह पहाड़ पर बाप के इबादत करब, ना यरूशलम में।**

**रउआ सामरी लोग ओह के परस्तिश करेलें, जेकरा के रउआ जानत नइखीं।**

**हमनी ओह के परस्तिश करिले, जेकरा के जानिले, काहे कि नजात यहूदियन में से बा।**

**बाकि ऊ वक़्त आवत बा, बल्कि आ चुकल बा, जब हक़ीक़ी परस्तार रूह अउर सच्चाई से बाप के परस्तिश करीहें।**

**काहे कि बाप अइसने परस्तार चाहेलें।**

**अल्लाह रूह बाड़न, एही से ज़रूरी बा कि उनकर परस्तार रूह अउर सच्चाई से उनकर परस्तिश करें।"**

**औरत कहलस:**

**"हम जानत बानी कि मसीह, यानी मसह कइल शख़्स आवे वाला बाड़न। जब ऊ आईहें, त हमनी के सभ कुछ बता दीहें।"**

**ईसा ओकरा से कहलन:**

**"हमहीं मसीह हईं, जे तोहरा से बात करत बानी।"**

ई गुनहगार औरत ख़ुदा के इबादत के तरीका के बारे में बहुत सवाल रखत रहल।

ऊ मसीह के आवे के इंतिज़ार करत रहल, ताकि ऊ आके ई सभ बात साफ-साफ समझा देवें।

एही से ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओकरा के अपना राज़ बता दिहलन कि ऊ खुदे मसीह बाड़न — उहे जेकरा के लोग सदियन से इंतिज़ार करत रहल।

ई बात कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह अपना असली पहचान एगो गुनहगार औरत पर ज़ाहिर कइलन, ई साबित करेला कि उनकरा मालूम रहल कि ई औरत उनकर पीछे चले खातिर तैयार बा।

एह मुलाक़ात के बाद हम देखत बानी कि ख़ुदा ओही औरत के इस्तेमाल कइलन, ताकि ऊ दूसर लोगन तक ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैग़ाम पहुँचावे।

ऊ पूरा शहर में जाके बतावे लागल:

"हमके एगो अइसन शख़्स मिलल बाड़न, जे हमार दिल के सभ बात बता दिहलन — का ऊ मसीह ना हो सकेलें?"

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमेशा ओह लोग पर बहुत रहमत अउर मेहरबानी करेलें, जे गुनाह छोड़ के तौबा करे अउर उनकर पीछे चले खातिर तैयार होला।

**ओही समय शागिर्द लोग पहुँच गइल।**

**ऊ लोग जब देखलस कि ईसा एगो औरत से बात करत बाड़न, त ताज्जुब कइलस।**

**बाकि केहू पूछे के हिम्मत ना कइलस कि "रउआ का चाहत बानी?" या "रउआ एह औरत से काहे बात करत बानी?"**

**औरत अपना घड़ा छोड़ के शहर में चल गइल अउर लोग से कहे लागल:**

**"आईं, एगो आदमी के देखीं, जे हमके सभ कुछ बता दिहलस जे हम कइले बानी। का ऊ मसीह ना हो सकेलें?"**

**फेर लोग शहर से निकल के ईसा के लगे आवे लागल।**

ई गुनहगार औरत ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह से मिलके उहाँ से निकलल अउर अपना पूरा गाँव के लोगन के बतावे लागल।

ऊ कहत रहल:

"आईं, एगो अइसन शख़्स के देखीं, जे हमार ज़िंदगी के हर बात बता दिहलन। का ई मसीह हो सकेलें?"

ओकर गवाही अउर जज़्बा देख के गाँव के लोग ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के तरफ आवे लागल।

ऊ लोग खुद देखल अउर समझल चाहत रहल कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह असल में के हउवें।

एही तरह, ख़ुदा हमनी से भी चाहेलें कि हम अपना ज़िंदगी के कहानी अउर ई बात कि ख़ुदा हमनी के कइसे बदललन, दूसर लोगन के बताईं, ताकि लोग दिलचस्पी लेके ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में अउरी जाने चाहे।

**ओह शहर के बहुत सारा सामरी लोग ईसा पर ईमान ले आइल।**

**वजह ई रहल कि ओह औरत उनकरा बारे में ई गवाही दिहले रहल:**

**"ऊ हमके सभ कुछ बता दिहलन जे हम कइले बानी।"**

**जब ऊ लोग उनकरा लगे आइल, त मिन्नत कइलस:**

**"हमनी लगे ठहरीं।"**

**एही से ऊ दू दिन उहाँ रहलन।**

**उनकर बात सुन के अउरी बहुत लोग ईमान ले आइल।**

**फेर ऊ लोग औरत से कहलस:**

**"अब हम तोहार बात पर ईमान नइखी रखत, बल्कि एह खातिर कि हम खुद सुन लिहनी अउर जान लिहनी कि वाक़ई दुनिया के नजातदहिंदा ईहे बाड़न।"**

ओह गुनहगार औरत के गवाही के वजह से बहुत लोग ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के लगे आइल।

ऊ लोग उनकर बात सुनलस अउर ईमान ले आइल।

ऊ लोग गवाही दिहलस कि ऊ "वाक़ई दुनिया के नजातदहिंदा" बाड़न।

ख़ुदा एह औरत के इस्तेमाल कइलन ताकि बहुत लोग ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के लगे आवे।

एही से ई गुनहगार औरत एगो बहुत अच्छा मिसाल बा अइसन आदमी के, जेकरा के ख़ुदा दूसर लोगन के शागिर्द बनावे खातिर इस्तेमाल कइलन।

अब ओकर ज़िंदगी के बारे में सोचीं।

का ऊ पढ़ल-लिखल रहल?

शायद ना।

का ओकरा ख़ुदा के कलाम के गहिरा इल्म रहल?

ना, ऊ शायद कबो ख़ुदा के कलाम ना पढ़ले रहल।

का ऊ इज़्ज़तदार ख़ातून रहल?

ना, ऊ गुनहगार रहल अउर ओकर गाँव के हर आदमी जानत रहल कि ऊ गुनहगार बा।

का ऊ बहुत समय से ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवीकार रहल?

ना, ऊ त नई ईमानवाली रहल।

अगर ख़ुदा एह गुनहगार औरत के दूसर लोगन के शागिर्द बनावे खातिर इस्तेमाल कर सकेलें, त ऊ रउआ के भी इस्तेमाल कर सकेलें।

एह औरत खाली एतने कइलस कि अपना दोस्त अउर घरवाला लोगन के लगे गइल अउर बतवलस कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के ज़रिए ख़ुदा ओकर ज़िंदगी कइसे बदल दिहलन।

ख़ुदा ओकर कहानी के इस्तेमाल कइलन, ताकि गाँव के दोसरा लोगन के दिल में ख़ुदा के तलाश करे के चाह पैदा होखे।

अक्सर हम एह कहानी के, कि ख़ुदा रउआ ज़िंदगी कइसे बदललन, “गवाही” कहिले बानी।

अपना गवाही में बताईं कि ख़ुदा रउआ ज़िंदगी में का कइलन।

रउआ गवाही में तीन हिस्सा होखे के चाहीं:

ईसा अल-मसीह पर ईमान लावे से पहिले रउआ ज़िंदगी कइसन रहल।

रउआ कइसे तौबा कइनी अउर ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर कइसे ईमान ले अइनी।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह रउआ ज़िंदगी कइसे बदल दिहलन।

लगभग तीन मिनट के ई वाक़िआ सुनावे खातिर तैयार करीं।

एक मिनट में बताईं कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान रखे से पहिले रउआ ज़िंदगी कइसन रहल।

फेर एक मिनट में बताईं कि रउआ कइसे तौबा कइनी अउर ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर कइसे ईमान ले अइनी।

आख़िर में, एक मिनट में बताईं कि ख़ुदा रउआ ज़िंदगी कइसे बदल दिहलन।

एह तरीका से रउआ गवाही अपने आप तैयार हो जाई।

अपना गवाही तैयार कइला के बाद, अपना दोस्त अउर घरवाला लोगन खातिर दुआ करीं।

दुआ करीं कि ख़ुदा रउआ के रास्ता देखावें कि केकर दिल रउआ गवाही सुने खातिर खुलल बा।

ओह आदमी खातिर दुआ कइला के बाद, समय निकाल के ओकरा साथ बइठीं अउर बताईं कि ख़ुदा रउआ ज़िंदगी में का-क्या कइलन।

अगर ऊ अउरी जानल चाहे, त ओकरा के ई रिकॉर्डिंग्स सुनाईं।

अगर ऊ अउरी सीखल चाहे, त ओकरा के दूसरी तालीमात सुनाईं अउर ओकर मदद करत रहीं कि ऊ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवी कइसे करे।

एही तरह ख़ुदा रउआ के भी दूसर लोगन के शागिर्द बनावे खातिर इस्तेमाल कर सकेलें।

अब जब ख़ुदा रउआ ज़िंदगी में काम कइले बाड़न, त सोचीं—

रउआ केकर मदद करब कि ऊ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवी कर सके?

## सबक – 13

# ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के छठवाँ हुक्म — अपना पड़ोसी से ओइसहीं मौहब्बत रखीं, जइसे अपना आप से रखत बानी

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के हर पैरवीकार के चाहीं कि ऊ दूसर लोगन से ओइसहीं मौहब्बत करे, जइसे ऊ अपना आप से करेला।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के दू गो सबसे बड़ा हुक्म ई बा:

पहिला — ख़ुदा से मौहब्बत करा।

दूसरा — अपना पड़ोसी से मौहब्बत करा।

आज के हमनी के तालीम इंजील शरीफ़, लूका 10:25-37 से बा।

सबक शुरू करे से पहिले पिछला तालीम के याद रखीं कि बनी-इस्राईल अउर सामरी लोगन अलग-अलग तहज़ीब से रहलन, अउर अक्सर एक-दूसरा के पसंद ना करत रहलन।

जे लोगन ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बात सुनत रहल, ऊ सब बनी-इस्राईल से रहल। एही से सुनने वाला लोग के नज़र में सामरी लोग बुरा समझल जात रहल।

आईं, अब सबक शुरू कइल जाव।

एक मौका पर शरीअत के एगो आलिम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के फँसावे खातिर खड़ा भइल। ऊ पूछलस:

"उस्ताद, हम का करीं कि मीरास में अबदी ज़िंदगी पा सकीं?"

ईसा ओकरा से कहलन:

"शरीअत में का लिखल बा? तू ओह में का पढ़त बाड़ऽ?"

आदमी जवाब दिहलस:

"रब अपना ख़ुदा से अपना पूरा दिल, पूरा जान, पूरा ताक़त अउर पूरा ज़ेहन से प्यार करऽ। अउर अपना पड़ोसी से ओइसहीं मौहब्बत रखऽ, जइसे तू अपना आप से रखत बाड़ऽ।"

ईसा कहलन:

"तू ठीक जवाब दिहलऽ। अइसहीं करऽ, त ज़िंदा रहबऽ।"

बाकि ऊ आलिम अपना आप के सही साबित करे खातिर पूछलस:

"त हमार पड़ोसी के हवे?"

ईसा जवाब में कहलन:

"एगो आदमी यरूशलम से यरीहू के तरफ जात रहल। रास्ता में ऊ डाकू लोगन के हाथ लग गइल। डाकू लोगन ओकर कपड़ा उतार लिहलस, ओकरा के खूब मारलस अउर अधमरा छोड़ के चल गइल।

इत्तिफ़ाक़ से, एगो इमाम भी ओही रास्ता से यरीहू के तरफ जात रहल। बाकि जब ऊ ज़ख़्मी आदमी के देखलस, त रास्ता के दोसरा ओर से निकल गइल।

लावी क़बीला के एगो ख़ादिम भी उहाँ से गुज़रल। ऊ भी ओह ज़ख़्मी आदमी के देखलस, बाकि रास्ता के दोसरा ओर से निकल गइल।

फेर सामरिया के एगो मुसाफ़िर उहाँ से गुज़रल। जब ऊ ज़ख़्मी आदमी के देखलस, त ओकरा पर तरस आइल।

ऊ ओकरा लगे गइल, ओकर ज़ख़्मन पर तेल अउर मै लगवलस, पट्टी बाँधलस। फेर ओकरा के अपना गधा पर बइठा के सराय तक ले गइल। उहाँ ऊ ओकर अउरी देखभाल कइलस।

अगिला दिन ऊ चाँदी के दू सिक्का निकाल के सराय के मालिक के दिहलस अउर कहलस:

'एकर देखभाल करिहऽ। अगर खर्चा एह से ज़्यादा हो जाई, त हम वापसी पर अदा कर देब।'"

फेर ईसा पूछलन:

"अब तोहार का ख़याल बा? डाकू लोगन के हाथ पड़ल आदमी के पड़ोसी के साबित भइल — इमाम, लावी, कि सामरी?"

आलिम जवाब दिहलस:

"ऊ आदमी, जे ओकरा पर रहम कइलस।"

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह कहलन:

"बिल्कुल ठीक। अब तू भी जा अउर अइसहीं कर।"

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमनी के दू गो सबसे बड़ा हुक्म सिखवलन।

पहिला हुक्म ई बा:

"अपना रब ख़ुदा से अपना पूरा दिल, पूरा जान, पूरा ताक़त अउर पूरा दिमाग़ से मौहब्बत करऽ।"

दूसरा हुक्म ई बा:

"अपना पड़ोसी से ओइसहीं मौहब्बत करऽ, जइसे तू अपना आप से करेलऽ।"

ई हमनी के ईमान के सबसे बड़ी तालीमात में से बा।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमनी के बतवलन कि हमार पड़ोसी के हवे।

ऊ एगो वाक़िआ सुनवलन एगो बनी-इस्राईली आदमी के बारे में, जे रास्ता में मार-पीट के ज़ख़्मी कर दिहल गइल। ओकर सब सामान लूट लिहल गइल अउर ओकरा के लहूलुहान हालत में सड़क पर छोड़ दिहल गइल।

फेर एगो काहिन ओह रास्ता से गुज़रल अउर ओकरा के देखलस।

ई काहिन हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) के औलाद में से रहल अउर बनी-इस्राईल के इबादत में इमामत करत रहल।

ऊ एगो इज़्ज़तदार रूहानी रहनुमा रहल।

बाकि ऊ ओह आदमी के मदद ना कइलस।

फेर एगो लावी आइल अउर ऊ भी ओह आदमी के देखलस।

लावी हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) के बेटा लावी के औलाद में से होला। लावी लोग बैतुल-मुक़द्दस में इबादतगाह के देखभाल करत रहल।

बाकि एह लावी ने भी ओह आदमी के मदद ना कइलस।

आखिर में एगो सामरी आदमी आइल अउर ओह ज़ख़्मी आदमी के देखलस।

सामरी बनी-इस्राईल से अलग क़ौम के रहल।

असल बात ई बा कि बनी-इस्राईल अउर सामरी लोगन एक-दूसरा के पसंद ना करत रहल।

फेर भी ओह सामरी आदमी रास्ता में पड़ल आदमी के मदद कइलस अउर ओकर इलाज के खर्चा भी उठवलस।

ई क़िस्सा बतावे के बाद ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह एगो सवाल पूछलन:

"एह तीनो में से तोहार ख़याल में ओह आदमी के पड़ोसी के साबित भइल, जे डाकू लोग के हाथ पड़ गइल रहल?"

शरीअत के आलिम जवाब दिहलस:

"ऊ, जे ओकरा पर रहम कइलस।"

तब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओकरा से कहलन:

"जा, अउर तू भी अइसहीं कर।"

एह बात के बुनियादी मतलब ई रहल कि जे लोग अलग-अलग क़ौम से भी होखे, ऊ भी हमनी के पड़ोसी बा।

हमनी के उनकरा से भी ओइसहीं मौहब्बत करे के चाहीं, जइसे हम अपना आप से करिले।

दूसर लोगन से मौहब्बत करना, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के मानने वाला लोगन के सबसे अहम ज़िम्मेदारियन में से एगो बा।

ई बात बहुत ध्यान देवे लायक बा कि शरीअत के ऊ आलिम, जे सबसे पहिले ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के लगे आइल, ऊ एगो आलिम-ए-दीन रहल।

ऊ तौरात शरीफ़ के बड़ा आलिम रहल, जे ख़ुदा हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर नाज़िल कइले रहलन।

ऊ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के आज़मावे के इरादा से आइल रहल।

लिखल बा कि "शरीअत के एगो आलिम उठल, ताकि ऊ उनकरा के आज़मावे।"

बहुत सारा मज़हबी रहनुमा दूसर लोगन के परखल चाहेलें, बाकिर अपना ज़िंदगी में तालीमात के लागू ना करेलें।

ई भी लिखल बा कि ओह आलिम पूछलस:

"हमार पड़ोसी के हवे?"

एह में शक नइखे कि ऊ चाहत रहल कि ओकरा खाली बनी-इस्राईल के लोगन से ही मौहब्बत करे के पड़े।

हुक्म सुनला के बाद भी ऊ अपना ज़िम्मेदारी कम करे चाहत रहल।

ज़रा सोचीं, जब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह एह मिसाल से देखवलन कि सामरी भी ओकर पड़ोसी बा, त ओकरा केतना मायूसी भइल होई।

बहुत लोग ओह शरीअत के आलिम जइसन होला।

ऊ लोग अपना पड़ोसी से मौहब्बत करे ना चाहेला।

एह वाक़िआ में काहिन अउर लावी भी अपना पड़ोसी से मौहब्बत करे खातिर तैयार ना रहलन।

सच बात ई बा कि कुछ लोग बहुत ज़्यादा मज़हबी होला, बाकिर उनकरा में मौहब्बत ना होला।

ख़ुदा अइसन बर्ताव से ख़ुश ना होखेलें।

अगर हम वाक़ई ख़ुदा के मानत बानी, त हम दूसर लोग से मौहब्बत करब।

इंजील शरीफ़ कहेला:

"हम एह खातिर मौहब्बत करिले कि अल्लाह पहिले हमनी से मौहब्बत कइलन।"
1 यूहन्ना 4:19

एही से अगर केहू मौहब्बत ना करेला, त एकर मतलब ई हो सकेला कि ऊ हक़ीक़त में ख़ुदा के ना मानेला।

हमनी के अइसन आदमी बने से डरना चाहीं, जे मज़हबी त होखे, बाकिर ओकर दिल मौहब्बत से खाली होखे।

ओकरा बजाय हमनी के सामरी आदमी के मिसाल पर चले के चाहीं।

ऊ बेग़र्ज़ होके सड़क पर पड़ल आदमी से मौहब्बत कइलस अउर ओकरा के अपना पड़ोसी समझलस।

ऊ अपना ज़िंदगी रोक दिहलस, यानी रास्ता में रुकल अउर ओह आदमी के ज़रूरी इलाज खातिर ले गइल।

बेशक ऊ भी मसरूफ रहल होई, बाकिर फेर भी ऊ अपना काम से समय निकाल के ओह आदमी के मदद कइलस।

ऊ ओकरा साथ ओइसहीं सुलूक कइलस, जइसन ऊ चाहत कि लोग ओकरा साथ करे।

ऊ अपना जेब से पैसा निकाल के ओह आदमी के पूरा खर्चा अदा कइलस, जेकरा से ऊ पहिले कबो मिलल भी ना रहल।

मुख़्तसर में, ऊ अपना पड़ोसी से अपना आप जइसन मौहब्बत कइलस।

हमनी के भी जाके अइसहीं करे के चाहीं।

ख़ुदा चाहेलें कि हम तमाम लोगन से मौहब्बत करीं।

एकर शुरुआत हमनी के अपना क़रीबी लोगन से करे के चाहीं।

शौहर अपना बीवी से मौहब्बत करे।

ओकरा के अज़ीज़ रखे अउर, ओकर तरक़्क़ी खातिर जे कुछ कर सके, करे।

बीवी अपना शौहर से मौहब्बत करे, अउर अपना हर अमल अउर बात में ओकर एहतराम करे।

अपना आस-पास के लोगन के बारे में सोचीं, खास तौर पर अपना ख़ानदान अउर क़रीबी पड़ोसी लोगन के बारे में।

के ज़रूरत में बा?

रउआ ओह लोगन के ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के मौहब्बत कइसे देखा सकत बानी?

कभी-कभी पड़ोसी से मौहब्बत करे के मतलब होला — ओकरा खाना, कपड़ा या इमदाद देना।

बाकि अक्सर एकर मतलब होला — हौसला-अफ़ज़ाई के बात कहना या कवनो मुश्किल काम में ओकर मदद करना।

अपना पड़ोसी से मौहब्बत करे के सबसे बुनियादी तरीका ई बा कि हम उनकरा खातिर दुआ करीं अउर ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैग़ाम उनकरा के सुनाईं।

जब ई तालीम ख़त्म हो जाव, त थोड़ा रुक के दुआ करीं।

दुआ करीं कि ख़ुदा रउआ ख़ानदान अउर पड़ोसी लोगन के बरकत दे।

दुआ करीं अउर ख़ुदा से पूछीं कि ऊ कौन एगो ख़ास आदमी बा, जेकरा से ख़ुदा चाहेलें कि रउआ मौहब्बत करीं।

ख़ुदा से दुआ करीं कि ऊ रउआ के रास्ता देखावें कि रउआ ओह आदमी के अपना मौहब्बत कइसे देखा सकीं।

फेर जाईं अउर वही करीं, जेकर रहनुमाई ख़ुदा रउआ के दिहले बाड़न।

अब एकरा के अपना ज़िंदगी के आदत बना लीं।

अपना ख़ानदान अउर पड़ोसी लोगन खातिर दुआ करे के आदत बनाईं।

अउर अइसन रास्ता खोजीं, जेकरा से रउआ लोगन से अपना आप जइसन मौहब्बत कर सकीं, जइसे ख़ुदा रउआ से मौहब्बत कइले बाड़न।

## सबक – 14

## ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के सातवाँ हुक्म —– इशा-ए-रब्बानी

इशा-ए-रब्बानी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवीकार लोगन खातिर बहुत अहम फ़र्ज़ बा।

पाक ग़ुस्ल अउर इशा-ए-रब्बानी — ई दू गो फ़राइज़ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमनी के दिहले बाड़न, ताकि हम ख़ुशख़बरी के अपना ज़िंदगी में सही तरीका से लागू कर सकीं।

आज के तालीम लूका 22:7-20 से बा।

सबक शुरू करे से पहिले, हम ईद-ए-फ़सह नाम के एगो त्योहार के बारे में समझावे चाहत बानी।

ई बनी-इस्राईल के सालाना त्योहार रहल, जेमे ऊ लोगन याद करत रहल कि ख़ुदा हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के ज़रिए उनकरा के मिस्र से कइसे निकाललन।

ओह समय ख़ुदा एगो फ़रिश्ता भेजलन, जे हर घर के बड़ा बेटा के जान ले लेत रहल।

बाकि ख़ुदा अपना लोगन के हुक्म दिहलन कि एगो लेला, यानी दुम्बा क़ुर्बान करा अउर ओकर ख़ून अपना दरवाज़ा पर लगा दऽ।

जे घर पर ख़ून लगल रहत, फ़रिश्ता ओह घर के फ़सह करत, यानी ओह घर के छोड़ के आगे बढ़ जात।

एही से एकरा के ईद-ए-फ़सह कहल जाला।

आज के वाक़िआ में भी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह अउर उनकर शागिर्द ईद-ए-फ़सह मना रहल रहलन।

लूका 22:7-20 के बयान

बेख़मीरी रोटी के ईद आ गइल, जब फ़सह के लेला के क़ुर्बान करे के रहल।

ईसा पतरस अउर यूहन्ना के आगे भेज के हिदायत दिहलन:

"जा, हमनी खातिर फ़सह के खाना तैयार करा, ताकि हमनी जाके ओकरा के खा सकीं।"

ऊ लोग पूछलस:

"हम ओकरा के कहाँ तैयार करीं?"

ऊ जवाब दिहलन:

"जब रउआ लोग शहर में दाख़िल होखब, त रउआ लोगन के एगो आदमी मिली, जे पानी के घड़ा उठवले चलत होई। ओकरा पीछे-पीछे ओह घर में जा, जेमे ऊ जाई।

उहाँ के मालिक से कहीं:

'उस्ताद रउआ से पूछत बाड़न कि ऊ कमरा कहाँ बा, जहाँ हम अपना शागिर्द लोगन के साथ फ़सह के खाना खाइब?'

ऊ रउआ लोगन के दूसरा मंज़िल पर एगो बड़ा अउर सजावल कमरा देखाई। फ़सह के खाना ओहीजा तैयार करीं।"

दूनो चल गइलन, अउर सभ कुछ ओइसहीं पवलन जइसे ईसा उनकरा के बतवले रहलन। फेर ऊ लोगन फ़सह के खाना तैयार कइलस।

मुक़र्रर वक़्त पर ईसा अपना शागिर्द लोगन के साथ खाना खाए खातिर बइठ गइलन।

ऊ उनकरा से कहलन:

"हमार बहुत शदीद आरज़ू रहल कि दुख उठावे से पहिले रउआ लोगन के साथ ई फ़सह के खाना खाईं।

काहे कि हम रउआ से कहत बानी कि जबले एकर मक़सद अल्लाह के बादशाही में पूरा ना हो जाई, तबले हम एह खाना में शरीक ना होइब।"

फेर ऊ मै के प्याला लेके शुक्रगुज़ारी के दुआ कइलन अउर कहलन:

"एकरा के लीं अउर आपस में बाँट लीं।

हम रउआ से कहत बानी कि अब से हम अंगूर के रस ना पीइब, जबले अल्लाह के बादशाही ना आ जाई।"

फेर ऊ रोटी लेके शुक्रगुज़ारी के दुआ कइलन, ओकरा के टुकड़ा कइलन अउर शागिर्द लोगन के दे दिहलन।

ऊ कहलन:

"ई हमार बदन बा, जे रउआ लोगन खातिर दिहल जात बा। हमके याद करे खातिर ई कइल करा।"

एही तरह, खाना के बाद ऊ प्याला लेके कहलन:

"मै के ई प्याला नया अहद बा, जे हमार ख़ून के ज़रिए क़ायम कइल जात बा; ऊ ख़ून जे रउआ लोग खातिर बहावल जात बा।"

एह ईद-ए-फ़सह के खाना में ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह रोटी लिहलन, ओकरा के तोड़लन अउर कहलन कि ई हमार बदन बा — जे रउआ लोग खातिर तोड़ल गइल बा।

"हमार याद में अइसहीं कइल करा।"

फेर ऊ प्याला लिहलन अउर कहलन कि ई हमार ख़ून में नया अहद बा — जे रउआ लोगन के गुनाह के माफ़ी खातिर बहावल गइल बा।

"हमार याद में अइसहीं कइल करा।"

एही से आज हम एह अमल के "इशा-ए-रब्बानी" कहिले बानी।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह सिखवलन कि रोटी उनकर बदन के नुमाइंदगी करेला, जे हमनी खातिर तोड़ल गइल।

ऊ कहलन कि मै, यानी शरबत के प्याला, उनकर ख़ून के नुमाइंदगी करेला, जे हमनी खातिर बहावल गइल।

एही से इशा-ए-रब्बानी एगो अइसन वक़्त बा जब हम याद करिले कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमनी के गुनाह खातिर सलीब पर अपना जान दे दिहलन।

सलीब पर उनकर बदन तोड़ल गइल।

सलीब पर उनकर ख़ून बहावल गइल।

एही काम के ज़रिए ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमनी के गुनाह माफ़ कइलन अउर हमनी के ख़ुदा के सामने रास्त अउर क़बूल कइल गइल बनवलन।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओह वक़्त के बारे में बात कइलन जब ख़ुदा के बादशाहत पूरा तरीका से ज़ाहिर होई।

ऊ कहलन:

"हमार बहुत शदीद आरज़ू रहल कि दुख उठावे से पहिले रउआ लोगन के साथ ई फ़सह के खाना खाईं। काहे कि हम रउआ से कहत बानी कि जबले एकर मक़सद अल्लाह के बादशाही में पूरा ना हो जाई, तबले हम एह खाना में शरीक ना होइब।"

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह जानत रहलन कि ऊ बहुत जल्दी सलीब पर क़ुर्बान कइल जइहें अउर शागिर्द लोगन से जुदा हो जइहें।

ऊ ई भी जानत रहलन कि एगो दिन आवे वाला बा जब उनकर बादशाहत पूरी क़ुदरत के साथ क़ायम होई।

जे दिन के ऊ बात करत रहलन, ऊ हिसाब के दिन, यानी क़ियामत के दिन बा, जब ख़ुदा के बादशाहत पूरा तरीका से आ जाई।

अगर हम ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवीकार बानी, त हिसाब के दिन के ई हक़ीक़त हमनी के बहुत बड़ा सुकून देला।

सलीब पर उनकर क़ुर्बानी के ज़रिए हमनी के गुनाह माफ़ हो चुकल बा।

एही से हम हिसाब के दिन के इंतज़ार पूरा ईमान के साथ कर सकत बानी।

हमनी खातिर हिसाब के दिन डर के दिन ना, बल्कि बड़ी खुशी अउर जश्न के दिन होई।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह एह दुनिया के सभ बुराई मिटा दीहें, अउर हम हमेशा-हमेशा खातिर ख़ुदा के साथ रहब।

एह हिस्सा में ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह अपना मौत के बारे में भी नबूवत कइलन, ताकि हमनी के गुनाह के माफ़ी हो सके।

ऊ खुशी-खुशी अपना जान दे दिहलन, ताकि हम ख़ुदा के सामने रास्त ठहरीं।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के क़ुर्बानी वाली मौत के याद करे खातिर, उनकर पैरवीकार लोग जब इकट्ठा होखे ला, त इशा-ए-रब्बानी बाक़ायदा लिहल जाला।

एह इकट्ठा होखे के हम जमाअत कहिले बानी।

हमनी के फ़र्ज़ बा कि ई जमाअत कम-से-कम हफ़्ता में एक बेर ज़रूर मिले, आम तौर पर कवनो घर में।

मसलन, कवनो जमाअत जुमे के दोपहर या इतवार के बिहान इकट्ठा हो सकेला।

जब जमाअत इकट्ठा होखेली, त ऊ दुआ करेली, इबादती गीत गावेली, इंजील शरीफ़ पढ़ेली अउर इशा-ए-रब्बानी में शरीक होखेली।

कवनो जमाअत के रुक्न बने खातिर ज़रूरी बा कि आदमी पहिले अपना गुनाह से तौबा करे अउर फेर पाक ग़ुस्ल ले।

इशा-ए-रब्बानी लेवे से पहिले, जमाअत तौबा अउर दुआ खातिर समय लेली।

इशा-ए-रब्बानी लेना हमनी के ई मौका देला कि हम अपना ज़िंदगी के फेर से ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के सलीब के पास ले आईं, ताकि रहमत अउर फ़ज़ल हासिल कर सकीं।

तौबा के बाद, कवनो आदमी रोटी लेला, ओकरा के तोड़ेला, अउर हमनी के ई याद दिलावेला:

"जे रात ख़ुदावंद ईसा के दुश्मन के हवाले कइल गइल, ऊ रोटी लिहलन, शुक्रगुज़ारी के दुआ कइलन, ओकरा के टुकड़ा कइलन अउर कहलन:

'ई हमार बदन बा, जे रउआ लोग खातिर दिहल जात बा। हमके याद करे खातिर ई कइल करा।'"
1 कुरिन्थियों 11:23-24

एहके बाद, हर ऊ आदमी जे बपतिस्मा लिहले होला, रोटी के एगो टुकड़ा लेला, अउर जमाअत दुआ के साथ मिलके ओकरा के खा लेली।

एहके बाद कवनो आदमी मै, यानी शरबत के प्याला लेला अउर कहेला:

"एही तरह ऊ खाना के बाद प्याला लेके कहलन:

'मै के ई प्याला नया अहद बा, जे हमार ख़ून के ज़रिए क़ायम कइल जात बा। जब-जब एकरा के पिअ, हमके याद करे खातिर पिआ।'

काहे कि जब-जब रउआ ई रोटी खाइब अउर ई प्याला पीइब, त ख़ुदावंद के मौत के एलान करब, जबले ऊ वापस ना आ जास।"
1 कुरिन्थियों 11:25-26

फेर ऊ प्याला आगे बढ़ावल जाला, अउर हर ऊ आदमी जे पाक ग़ुस्ल लिहले होला, ओह में से पीएला।

आखिर में सभे मिलके दुआ करेला अउर एगो इबादती गीत गावेला।

एह अमल में शरीक होखे खातिर ज़रूरी बा कि आदमी पहिले अपना गुनाह से तौबा करे, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान लावे, अउर पाक ग़ुस्ल ले।

एहके बाद ओकरा चाहीं कि अपना क़रीब रहत ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के दोसरा पैरवीकार लोग के साथ कम-से-कम हफ़्ता में एक बेर जमाअत में इकट्ठा होखे शुरू करे।

जमाअत के तौर पर हमनी बाक़ायदा मिलके इशा-ए-रब्बानी लेनी।

इशा-ए-रब्बानी लेवे के बाद हर आदमी अपना ईमान में नया सुकून अउर ताज़गी महसूस करेला।

इशा-ए-रब्बानी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के मौत के याद के एगो निशान बा।

ई ओह सभ लोग खातिर भी एगो तस्वीर अउर गवाही बा, जे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के बारे में सीखे खातिर रउआ जमाअत में आवेलें।

## सबक – 15

## ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के आठवाँ हुक्म — दिल से देना, यानी ज़कात देना

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के हर पैरवीकार के ज़िम्मेदारी बा कि ऊ ख़ुदा के काम खातिर माली तौर पर इमदाद करे। जब ख़ुदा हमनी के फ़राख़दिली से देलें, त हमनी के भी उनकर काम खातिर खर्च करे के चाहीं।

आज हम आठ हुक्मन में से आख़िरी हुक्म सीखब — दिल से देना।

ई हुक्म इंजील शरीफ़, मरकुस 12:41-44 से लिहल गइल बा।

आज के सबक शुरू करे से पहिले, हम बनी-इस्राईल के तहज़ीब के बारे में थोड़ा बात बतावे चाहत बानी।

तौरात शरीफ़ में ख़ुदा अपना लोगन के यरूशलम में बैतुल-मुक़द्दस बनावे के हुक्म दिहलन, जहाँ ऊ लोगन इबादत खातिर आवत रहल।

इबादत के एगो हिस्सा ई भी रहल कि बैतुल-मुक़द्दस के काम खातिर माली इमदाद दिहल जाव।

एह सबक में ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह बैतुल-मुक़द्दस के ओह हिस्सा में बइठल रहलन, जहाँ ई इमदाद अउर ज़कात दिहल जात रहल।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदा के बक्सा के सामने बइठ गइलन अउर हुजूम के हदिये डालत देखे लगलन।

कई अमीर लोग बड़ी-बड़ी रक़म डालत रहल।

फेर एगो ग़रीब बेवा भी उहाँ से गुज़रल, जे ओह बक्सा में ताँबा के दू मामूली सिक्का डाल दिहलस।

ईसा अपना शागिर्द लोगन के अपना लगे बुला के कहलन:

"हम रउआ लोगन से सच कहत बानी कि एह ग़रीब बेवा ने सभ लोगन से ज़्यादा डलले बिया।

काहे कि ई सब लोगन अपना दौलत के कसरत में से दिहलस, बाकि ई ज़रूरतमंद होखला के बावजूद अपना गुज़ारा के सारा पैसा दे दिहलस।"

काहे कि ई वाक़िआ बहुत छोट बा, एही से हम एकरा के एक बेर फेर पढ़ लेत बानी, ताकि हमनी एकरा के अच्छी तरह समझ सकीं अउर याद रख सकीं।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदा के बक्सा के सामने बइठ गइलन अउर हुजूम के हदिये डालत देखे लगलन।

कई अमीर लोग बड़ी-बड़ी रक़म डालत रहल।

फेर एगो ग़रीब बेवा भी उहाँ से गुज़रल, जे ओह बक्सा में ताँबा के दू मामूली सिक्का डाल दिहलस।

ईसा अपना शागिर्द लोग के अपना लगे बुला के कहलन:

"हम रउआ लोग से सच कहत बानी कि एह ग़रीब बेवा ने सभ लोग से ज़्यादा डलले बिया।

काहे कि ई सब लोग अपना दौलत के कसरत में से दिहलस, बाकिर ई ज़रूरतमंद होखला के बावजूद अपना गुज़ारा के सारा पैसा दे दिहलस।"

आज के सबक में हम एगो ग़रीब औरत के बारे में पढ़त बानी, जे ख़ज़ाना में बहुत थोड़ा रक़म डाललस।

एहके बावजूद, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओकर एह ज़कात से अमीरन के ज़कात के मुक़ाबला में ज़्यादा ख़ुश भइलन।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह खातिर देवे के नियत, दिहल गइल रक़म से ज़्यादा अहम रहल।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह फरमवलन:

"एह ग़रीब बेवा ने सभ लोग से ज़्यादा ख़ज़ाना में डालल बा।"

एह बात के मतलब का रहल?

ज़ाहिर बा कि अमीर लोग ओह बेवा से ज़्यादा पैसा डालले रहल।

बाकिर ओह बेवा जे कुछ ओकरा लगे रहल, सब दे दिहलस।

ख़ुदा के हमनी के पैसा के ज़रूरत नइखे।

ऊ चाहेलें कि हम क़ुर्बानी के साथ दीं अउर उनकरा पर भरोसा रखीं कि ऊ हमनी के ज़रूरत पूरा करीहें।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओह औरत के दिल देखलन अउर अपना शागिर्द लोगन के बुला के ओकर क़ुर्बानी के तरफ़ इशारा कइलन, अउर ओकरा के इज़्ज़त दिहलन।

हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के तहरीरन में ई हुक्म दिहल गइल रहल कि ख़ुदा के क़ौम अपना आमदनी के दसवाँ हिस्सा, यानी उशर, ख़ुदा के दे।

एह सबक में हम देखत बानी कि कुछ अमीर लोगन बहुत पैसा डालत रहल, काहे कि उनकरा लगे बहुत पैसा रहल।

ई अमीर लोगन अपना फ़र्ज़ी उशर देत रहल।

बाकि ई क़ुर्बानी के साथ दिहल गइल ज़कात ना रहल।

हालाँकि ऊ लोगन बहुत देत रहल, बाकि उनकरा खातिर ई आसान रहल, काहे कि उनकरा ओह पैसा के ज़रूरत ना रहल।

एहके बरअक्स, ग़रीब बेवा क़ुर्बानी के साथ दिहलस।

ओकरा लगे बहुत कम रहल, फेर भी जे कुछ ओकरा लगे रहल, सब ख़ुदा के दे दिहलस।

ई क़ुर्बानी वाली ज़कात रहल, काहे कि ओकरा अपना ज़िंदगी गुज़ारे खातिर ओह पैसा के ज़रूरत रहल।

ई ग़रीब औरत ख़ुदा पर पूरा भरोसा कइलस अउर जे कुछ ओकरा लगे रहल, ऊ ख़ुदा के सौंप दिहलस।

कभी-कभी हम सुनत बानी कि खाली अमीर लोग के ही ख़ुदा के काम खातिर देवे के चाहीं।

बाकि हक़ीक़त ई बा कि देना रक़म से ज़्यादा देवे वाला के दिल से ताल्लुक़ रखेला।

जब हम ख़ुदा के काम खातिर माली तौर पर देत बानी, त हमार ईमान बढ़ेला।

हम अपना पैसा के मामला में ख़ुदा पर भरोसा करिले कि ऊ आगे भी हमनी के ज़रूरत पूरा करत रहीहें।

हम रउआ के दावत देत बानी कि रउआ ख़ुदा के काम खातिर फ़राख़दिली से देना शुरू करीं अउर ई उम्मीद रखीं कि ख़ुदा रउआ के ज़रूरत पूरा करीहें।

देवे के सबसे मुनासिब जगह रउआ जमाअत बा।

फेर रउआ जमाअत के मिलके दुआ करे के चाहीं अउर ख़ुदा से पूछे के चाहीं कि ऊ एह पैसा के कइसे इस्तेमाल करे चाहेलें, जे ऊ मुहैया करा रहल बाड़न।

ई वाक़िआ पढ़ के हमनी के हिर्स, यानी लालच के गुनाह के याद आवेला, हालाँकि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह अमीर लोगन पर सीधा इल्ज़ाम ना लगवलन।

आज के मुआशरा में लालच एगो आम गुनाह बा।

कभी-कभी अइसन लागेला कि केहू अपना लगे जे बा, ओह से मुतमइन यानी खुश नइखे।

अमीर अउरी अमीर बने चाहेलें, अउर ग़रीब लोग कई बेर पैसा हासिल करे के ही ज़िंदगी के सबसे बड़ा मक़सद बना लेला।

बाकिर ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह हमनी के ख़बरदार कइलन कि हम दू नाव पर सवार ना हो सकीं।

हम एके साथ पैसा अउर ख़ुदा दुनो के इबादत ना कर सकीं।

हमनी के अपना ज़रूरत खातिर मेहनत करे के चाहीं अउर अपना ख़ानदान के ख़्याल रखे के चाहीं, बाकि लालच से बचे के ज़रूरी बा।

लालच तब पैदा होला जब हम ख़ुदा से ज़्यादा पैसा के पीछे भागे लगिले।

अगर रउआ दिल में लालच बा, त एह वाक़िआ में ग़रीब बेवा के मिसाल पर चलीं।

आज अपना दिल के जाइज़ा लीं।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ई ना कहलन कि अमीर लोगन खाली अपना उशर देके गुनाह कइलस।

बाकि ऊ ग़रीब बेवा के हमनी खातिर एगो नमूना बनाके पेश कइलन।

हालाँकि ऊ ग़रीब रहल अउर शायद ओकर ख़्याल रखे वाला केहू ना रहल, फेर भी ई औरत ख़ुदा पर भरोसा कइलस अउर जे कुछ ओकरा लगे रहल, सब ख़ुदा के दे दिहलस।

ओकर ईमान अउर क़ुर्बानी के साथ दिहल ज़कात के वजह से ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ओकर तारीफ़ कइलन।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवीकार होखला के नाते, हमनी के फ़राख़दिली से देवे के चाहीं।

बराये मेहरबानी, ई अपना आदत बना लीं कि रउआ अपना आस-पास के लोगन के साथ सख़ावत, यानी खुले दिल से पेश आईं।

रउआ जमाअत के भी ज़कात जमा करे के चाहीं।

फेर रउआ जमाअत के मिलके दुआ करे के चाहीं कि ख़ुदा के रहनुमाई में एह पैसा के सबसे बेहतर इस्तेमाल कइसे कइल जाव।

आम तौर पर ई पैसा ख़ुदा के बादशाहत के आगे बढ़ावे या ग़रीबन के मदद करे खातिर इस्तेमाल कइल जाला।

अपना जमाअत खातिर दिल खोल के ज़कात दीं।

## सबक – 16

## जमाअत कइसे अउर काहे क़ायम करना ज़रूरी बा?

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के हर पैरवीकार के कवनो जमाअत के हिस्सा होखे के चाहीं।

जमाअत से हमार मतलब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवीकारन के ऊ गिरोह बा, जे हफ़्ता में कम-से-कम एक बेर इकट्ठा होके दुआ करेला, किताब-ए-मुक़द्दस के तालीम हासिल करेला, इबादत करेला अउर इशा-ए-रब्बानी में शरीक होला।

जमाअतन के कभी-कभी कलीसिया भी कहल जाला।

इंजील-ए-शरीफ़ में आम तौर पर जमाअत के क़ियादत एक या एक से ज़्यादा बुज़ुर्ग लोगन के हाथ में होला, जेकरा के कभी-कभी पास्टर भी कहल जाला।

आम तौर पर ई बुज़ुर्ग लोगन जमाअत के रहनुमाई करेला अउर कलाम-ए-ख़ुदा के तालीम देला।

बाकि जमाअत के हर ईमानवाला आदमी एह ज़िम्मेदारी में शरीक बा कि ऊ जाव अउर शागिर्द बनावे।

अक्सर जब कवनो नई जमाअत शुरू होला, त ओह में कवनो अइसन बुज़ुर्ग मौजूद ना होला जे जमाअत के क़ियादत खातिर तरबियत-याफ़्ता होखे।

फ़िक्र मत करीं, ई एगो मामूल के बात बा।

नई जमाअत अक्सर कुछ बखत तक बिना तरबियत-याफ़्ता रहनुमा के इकट्ठा होला, बाकिर वक़्त के साथ आम बात बा कि एक या एक से ज़्यादा बुज़ुर्ग जमाअत खातिर तैयार कइल जास।

आज हम इंजील-ए-शरीफ़ में बयान कइल गइल पहिली जमाअत के बारे में सीखब।

जब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह सलीब पर क़ुर्बान भइलन, दफ़्न कइल गइलन अउर फेर मुर्दन में से जी उठलन, त इंजील-ए-शरीफ़ हमनी के बतावेला कि ऊ चालीस दिन तक अपना क़रीबी शागिर्दन से मिलत रहलन अउर उनकरा के ख़ुदा के बादशाही के बारे में तालीम देत रहलन।

ऊ उनकरा के ई हुक्म दिहलन:

"बाकि रउआ लोगन के रूहुल-क़ुद्स के क़ुव्वत मिली, जे रउआ पर नाज़िल होई। फेर रउआ यरूशलम, पूरा यहूदिया अउर सामरिया, बल्कि दुनिया के इंतहा तक हमार गवाह होखब।"
आमाल 1:8

एहके बाद ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह फेर से आसमान पर चल गइलन।

फेर ऊ अपना क़रीबी शागिर्दन पर रूहुल-क़ुद्स के क़ुदरत नाज़िल कइलन, जिनमें से एगो रसूल पतरस (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी रहलन।

जब रूहुल-क़ुद्स रसूल पतरस (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर नाज़िल भइल, त उनकरा बहुत लोगन के सामने ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैग़ाम बयान करे के मौका मिलल।

एहके नतीजा में तीन हज़ार आदमी बपतिस्मा, यानी पाक ग़ुस्ल लिहलन, अउर पहिली जमाअत के बुनियाद पड़ल।

अब इंजील-ए-शरीफ़ में रसूलन के आमाल 2:37-47 से ई वाक़िआ बयान कइल गइल बा।

पतरस के ई बात सुनके लोगन के दिल छिद गइल।

ऊ लोगन पतरस अउर बाकी रसूलन से पूछलस:

"भाइयो, अब हमनी का करीं?"

पतरस जवाब दिहलन:

"रउआ में से हर आदमी तौबा करे अउर ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले, ताकि रउआ के गुनाह माफ़ हो जाव। फेर रउआ के रूहुल-क़ुद्स के नेमत मिल जाई।

काहे कि ई वादा रउआ से अउर रउआ बच्चन से कइल गइल बा, बल्कि ओह लोगन से भी जे दूर बाड़े, यानी ओह सभे से जिनका के रब हमार ख़ुदा अपना लगे बुलइहें।"

पतरस अउरी बहुत बातन से उनकरा के नसीहत कइलन अउर समझवलन:

"एह टेढ़ी नस्ल से निकल के नजात पाईं।"

जिन लोग पतरस के बात क़बूल कइलस, उनकर बपतिस्मा भइल।

एह तरीका से ओह दिन जमाअत में करीब तीन हज़ार लोगन के इज़ाफ़ा भइल।

ई ईमानदार लोग रसूलन से तालीम पावत रहल, रिफ़ाक़त रखत रहल, रिफ़ाक़ती खाना अउर दुआओं में शरीक होत रहल।

सभे पर ख़ौफ़ छा गइल अउर रसूलन के ज़रिए बहुत सारा मोजिज़ा अउर इलाही निशान देखावल गइल।

जे लोग ईमान लावत रहल, ऊ एक जगह जमा होत रहल।

उनकर हर चीज़ मुश्तरका रहल।

ऊ लोग अपना मिल्कियत अउर माल बेच के हर आदमी के ओकर ज़रूरत के मुताबिक़ देत रहल।

रोज़ाना ऊ लोग यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस में जमा होत रहल।

साथे-साथे ऊ लोगन मसीह के याद में अपना घरन में रोटी तोड़त रहल, बड़ी खुशी अउर सादगी से रिफ़ाक़ती खाना खात रहल।

ऊ लोगन अल्लाह के तमजीद करत रहल।

ओह वक़्त ऊ तमाम लोगन के मंज़ूरे-नज़र रहल।

अउर ख़ुदावंद रोज़-ब-रोज़ जमाअत में नजातयाफ़्ता लोग के इज़ाफ़ा करत रहलन।

अगर हम ई जानल चाहत बानी कि इंजील-ए-शरीफ़ जमाअत के बारे में का तालीम देला, त सबसे अच्छा ई बा कि हम पहिली जमाअत के वाक़िआ पढ़ीं अउर समझीं।

आईं, एह हिस्सा से जमाअत के पाँच गो पहलू पर ग़ौर करीं।

पहिला पहलू:

जमाअत के हिस्सा बने खातिर लोग के तौबा करना, ईमान लाना अउर बपतिस्मा यानी पाक ग़ुस्ल लेना ज़रूरी रहल।

हक़ीक़त में, जमाअत ऊ बपतिस्मा-याफ़्ता पैरवीकारन के गिरोह बा, जे मिलके ई फ़ैसला कइले होखे कि ऊ बाक़ायदा इख़लास, यानी सच्चा मन से जमा होई, आपस में रिफ़ाक़त रखी अउर मिलके ख़ुदा के ख़िदमत करी।

अगर रउआ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवी करे के फ़ैसला कइले बानी, त रउआ के कवनो जमाअत के हिस्सा होखे के चाहीं।

दूसरा पहलू:

जमाअत के रोज़मर्रा के फ़राइज़ उहे बा, जे मसीह के आठ अहकाम बाड़े, जिनकर हम पहिले मुताला कर चुकल बानी।

जमाअत के चाहीं कि ई सब काम मिलके करे अउर एक-दूसरा के मदद करे, ताकि सभे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवी में मज़बूत रह सके।

पहिला हुक्म बा — तौबा करना अउर ईमान लाना।

दूसरा हुक्म बा — बपतिस्मा लेना, यानी पाक ग़ुस्ल लेना।

ई दुनो अहकाम हम आयत 38 में देखत बानी, जहाँ रसूल पतरस (रज़ियल्लाहु अन्हु) हुक्म दिहलन:

"रउआ में से हर आदमी तौबा करे अउर ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले, ताकि रउआ के गुनाह माफ़ हो जाव। फेर रउआ के रूहुल-क़ुद्स के नेमत मिल जाई।"

तीसरा हुक्म बा — दुआ करना।

हम पढ़त बानी कि ई पहिली जमाअत मिलके दुआ करे में मशग़ूल रहत रहल।

चउथा हुक्म बा — किताब-ए-मुक़द्दस के मुताला।

एह हिस्सा में हम देखत बानी कि नया ईमानवाला लोग रसूलन के तालीम से जुड़ल रहल।

पाँचवाँ हुक्म बा — जाईं अउर शागिर्द बनाईं।

ई वाक़िआ एह बात पर ख़त्म होला कि ख़ुदा रोज़ नजात पावे वाला लोग के जमाअत में शामिल करत रहलन।

एकर मतलब ई बा कि जमाअत के लोग ईमानदारी से दूसर लोग के ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैग़ाम सुना रहल रहल।

छठवाँ हुक्म बा — दूसर लोग से मौहब्बत करना।

पहिली जमाअत आपस में रिफ़ाक़त रखत रहल अउर अपना मिल्कियत, यानी माल-दौलत बेच के ज़रूरतमंदन में तक़सीम करत रहल, ताकि उनकरा बीच केहू मोहताज ना रहे।

ओइसहीं आजो जमाअत के हर आदमी के चाहीं कि ऊ दूसर लोग के मदद करे।

सातवाँ हुक्म बा — इशा-ए-रब्बानी लेना।

एह वाक़िआ में दू बेर “रोटी तोड़ने” के ज़िक्र आवेला।

रोटी तोड़ने से मुराद ई बा कि पहिली जमाअत बाक़ायदा मिलके इशा-ए-रब्बानी में शरीक होत रहल।

आठवाँ हुक्म बा — देना।

एह हिस्सा में हम देखत बानी कि ईमानदार लोग अपना मिल्कियत, यानी माल-दौलत तक बेच दिहलन अउर बड़ी फ़राख़दिली से दूसर लोग के ज़रूरत पूरा कइलन।

जमाअत के लोग जमाअत खातिर दिल खोल के देला।

एह तरह जमाअत ऊ ईमानदारन के गिरोह बा, जे मिलके आठो अहकाम पर अमल करेला अउर एक-दूसरा के मदद करेला, ताकि सभे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरवी में क़ायम रहे।

तीसरा पहलू:

जमाअत कवनो भी वक़्त जमा हो सकेला।

एह हिस्सा में हम देखत बानी कि जमाअत रोज़ाना मिलत रहल।

एकर मतलब ई बा कि जमाअत मंगल के दिन, जुमे के दिन या इतवार के दिन भी मिल सकेला।

कवनो खास वक़्त मुक़र्रर नइखे।

जमाअत के चाहीं कि ऊ कम-से-कम हफ़्ता में एक बेर इबादत, दुआ, किताब-ए-मुक़द्दस के मुताला अउर आपसी हौसला-अफ़ज़ाई खातिर जमा होखे।

चउथा पहलू:

जमाअत कवनो भी जगह जमा हो सकेला।

एह हिस्सा में जमाअत घरन में भी जमा होत रहल अउर बैतुल-मुक़द्दस में भी।

एकर मतलब ई बा कि जमाअत कवनो खास इमारत में भी इबादत कर सकेला, बाकिर अक्सर जमाअत घरन में ही मिलेला।

जमाअत के तौर पर ई तय करीं कि रउआ लोग बाक़ायदा कहाँ जमा हो सकत बानी।

पाँचवाँ पहलू:

जमाअत ख़ुदा के जलाल खातिर उनकर इबादत करेला।

एह हिस्सा में ख़ुदा के हम्द करे से मुराद इबादत के गीत गावल बा।

ई बिल्कुल मामूल के बात बा कि जमाअत इकट्ठा होके क़ादिर-ए-मुतलक़ के सना में गीत गावे।

हमार दुआ बा कि ख़ुदा रउआ के भी अइसन जमाअत के हिस्सा बने के मौका दे, जइसन जमाअत के ज़िक्र इहाँ कइल गइल बा।

अगर रउआ लगे कवनो जमाअत मौजूद नइखे, त अपना दोस्त अउर ख़ानदान वाला लोग के साथ ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैग़ाम बताईं।

मुमकिन बा कि रउआ लोग मिलके एगो नई जमाअत शुरू कर सकीं।

## सबक – 17

## इंजील शरीफ़ में कवनो तब्दीली, यानी बदलाव नइखे भइल

आज कुछ लोग कहेला कि इंजील-ए-शरीफ़ में तब्दीली कर दिहल गइल बा, या ऊ मंसूख हो चुकल बा।

अस्तग़फ़िरुल्लाह!

इंजील-ए-शरीफ़ के बारे में अइसन बात कहना बिल्कुल गैर-मुनासिब बा।

इंजील-ए-शरीफ़ में तब्दीली मुमकिने नइखे, काहे कि क़ादिर-ए-मुतलक़ अपना किताबन के खुद हिफ़ाज़त करेलें।

ख़ुदा आसमान अउर ज़मीन के पैदा कइलन। यक़ीनन, अगर ऊ ई कर सकेलें, त ऊ अपना किताबन के हिफ़ाज़त भी कर सकेलें।

हज़रत ईसा अल-मसीह फरमवले रहलन:

"आसमान अउर ज़मीन टल जइहें, बाकिर हमार कलाम कबो ना टली।"

कभी-कभी हम लोग से पूछिले:

"आख़िर इंजील-ए-शरीफ़ के बदलल के?"

आम तौर पर जवाब मिलेला कि हज़रत ईसा अल-मसीह के पैरवीकारन ने एकरा के बदल दिहल।

अइसन कहना बे-बुनियाद अउर नादानी के बात बा।

अगर केहू कहे कि हज़रत ईसा अल-मसीह के पैरवीकारन ने ख़ुदा के किताब बदल दिहल, त एकर मतलब ई होई कि ऊ लोग अल्लाह से ज़्यादा ताक़तवर रहल।

काहे कि अल्लाह के किताब के ओकर हाथ से छीन के बदल देवे खातिर अल्लाह से ज़्यादा ताक़त चाहीं।

कभी-कभी हम ई भी पूछिले:

"आख़िर ई तब्दीली कब भइल?"

एह सवाल के कवनो तसल्ली-बख़्श, यानी मुतमइन कर देवे वाला जवाब मौजूद नइखे।

अगर केहू कहे कि ई किताब क़ुरआन के नाज़िल होखे से पहिले ही बदल चुकल रहल, त फेर क़ुरआन गलत गवाही देत बा, काहे कि क़ुरआन खुद गवाही देला कि इंजील-ए-शरीफ़ अल्लाह के किताब बा।

क़ुरआन में सैकड़न बेर ई बयान मिलेला कि इंजील-ए-शरीफ़ क़ादिर-ए-मुतलक़ के तरफ़ से नाज़िल कइल गइल एगो अच्छी किताब बा।

बाकिर अगर केहू ई दावा करे कि इंजील-ए-शरीफ़ क़ुरआन के नाज़िल होखे के बाद बदलल गइल, त तारीख़ एह दावा के रद्द कर देला।

इंजील-ए-शरीफ़ के हज़ारन क़दीम मख़्तूतात, यानी क़दीम नुस्ख़ा मौजूद बा, जिनमें से कई क़ुरआन से भी पहिले के बा।

जब एह क़दीम नुस्ख़न के आपस में मुक़ाबला कइल जाला, त साफ़ ज़ाहिर होला कि इंजील-ए-शरीफ़ में कवनो तब्दीली नइखे भइल।

आज हमनी लगे जे इंजील-ए-शरीफ़ मौजूद बा, ऊ ओही क़दीम नुस्ख़न के मुताबिक़ बा।

बाकिर जे लोग क़ुरआन के मानेलें, उनकरा खातिर हम क़ुरआन के दू-तीन आयत पेश करे चाहत बानी, जे साफ़ तौर पर एह बात के तस्दीक़ करेली कि इंजील-ए-शरीफ़ अल्लाह के तरफ़ से बा।

सूरह यूनुस, जे दसवीं सूरह बा, ओकर आयत 94 क़ुरआन खातिर एगो इम्तिहान पेश करेला। एह में फरमावल गइल बा:

"अगर तू ओह चीज़ के बारे में शक में बाड़ऽ, जे हम तोहरा तरफ़ नाज़िल कइले बानी, त ओह लोग से पूछऽ जे तोहरा से पहिले किताब पढ़त चल आ रहल बाड़े। बेशक तोहरा रब के तरफ़ से हक़ तोहरा लगे आ चुकल बा, एही से शक करे वाला लोग में से मत बनऽ।"

एह आयत में क़ुरआन ई तस्लीम, यानी क़बूल करेला कि अगर केहू के क़ुरआन या ओकर तालीम के बारे में शक होखे, त ओकरा पहिले के किताब पढ़े वाला लोग से पूछे के चाहीं — यानी तौरात, ज़बूर अउर इंजील-ए-शरीफ़ के मानने वाला लोग से।

एह तरह क़ुरआन खुद अपना खातिर ई क़ायदा मुक़र्रर करेला कि ओकर तालीम पहिले के किताबन के मुताबिक़ होखे के चाहीं।

एह तरह क़ुरआन एह बात के तस्दीक़ करेला कि इंजील-ए-शरीफ़ कलाम-ए-अल्लाह बा।

अब हम क़ुरआन के एगो अउरी आयत पेश करत बानी।

सूरह अल-माइदा, जे पाँचवीं सूरह बा, ओकर आयत 46 में फरमावल गइल बा:

"अउर हम उनकर नक़्शे-क़दम पर ईसा इब्न-ए-मरयम के भेजनी, जे तौरात के तस्दीक़ करे वाला रहलन, जे उनकरा से पहिले नाज़िल भइल रहल। अउर हम उनकरा के इंजील अता कइनी, जेमे हिदायत अउर नूर बा, अउर ऊ तौरात के तस्दीक़ करे वाली बा, जे ओकरा से पहिले नाज़िल भइल रहल, अउर अल्लाह से डरे वाला लोग खातिर हिदायत अउर नसीहत बा। अउर इंजील वाला लोग के चाहीं कि जे कुछ अल्लाह ओह में नाज़िल कइले बाड़न, ओकर मुताबिक़ फ़ैसला करें।"

क़ुरआन गवाही देला कि हज़रत ईसा अल-मसीह के हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद भेजल गइल, यानी उनकर किताब अउर तालीमात आपस में मेल रखेला।

एही वजह से हज़रत ईसा अल-मसीह के पैरवीकार खाली एगो किताब ना, बल्कि तौरात, ज़बूर अउर इंजील-ए-शरीफ़ तीनो पढ़ेलें।

क़ुरआन के ई आयत ई भी बयान करेला कि इंजील-ए-शरीफ़ हमनी के रूहानी ज़िंदगी खातिर हिदायत अउर नूर बा।

यक़ीनन, क़ुरआन इंजील-ए-शरीफ़ के बहुत बड़ा एहतिराम अउर अज़मत अता करेला।

क़ुरआन में सौ से ज़्यादा आयत मौजूद बा जे एह हक़ीक़त के गवाही देली कि इंजील-ए-शरीफ़ क़ादिर-ए-मुतलक़ के तरफ़ से एगो अच्छी किताब बा।

बाकिर क़ुरआन के कवनो आयत ई ना कहेली कि तौरात, ज़बूर या इंजील-ए-शरीफ़ में तब्दीली हो चुकल बा।

फेर ई शरारत-आमेज़ ख़याल कहाँ से आइल?

अगर ई किताबन से नइखे आइल, त फेर ई इंसानन के सोच के नतीजा बा।

अब सवाल ई बा कि अगर मुक़द्दस किताबन एगो बात कहें अउर इंसान दूसरी बात बताएँ, त हमनी के केकर बात माने के चाहीं?

हमरा नज़दीक ई ख़याल कि इंजील-ए-शरीफ़ बदल दिहल गइल बा, ख़ुदा के तरफ़ से ना, बल्कि इंसानन के तरफ़ से बा।

एही से एह ख़याल के पूरा तरह रद्द कर देवे के चाहीं।

दरहक़ीक़त, ई इब्लीस के चाल बा कि ऊ लोगन के ई यक़ीन दिलावे कि इंजील-ए-शरीफ़ बदल दिहल गइल बा।

शैतान चाहेला कि लोग इंजील-ए-शरीफ़ के क़ुदरत, ख़ूबसूरती अउर हक़ीक़त से महरूम रहे।

एह झूठन के रद्द करीं अउर क़ादिर-ए-मुतलक़ के एह सच्ची वही के क़ुदरत अउर जमाल के खुद आके देखीं।

# सबक – 18

## इंजील-ए-शरीफ़ के तारीख़

पिछला सबक में हमनी ई सीखनी कि इंजील-ए-शरीफ़ में कवनो तब्दीली नइखे कइल गइल। ई शैतान के तरफ़ से फैलावल झूट बा कि क़ादिर-ए-मुतलक़ के तरफ़ से नाज़िल कइल गइल एह ख़ूबसूरत किताब के बदल दिहल गइल बा या मंसूख कर दिहल गइल बा।

जइसे हज़रत ईसा अल-मसीह इंजील-ए-मत्ती 24:35 में फरमवलन:

"आसमानो-ज़मीन त जाते रही, बाकिर हमार बात हमेशा तक क़ायम रही।"

ई सबक हमनी के इंजील-ए-शरीफ़ के तारीख़ अउर ओकर मज़ामीन के बारे में अउरी मालूमात देला।

ख़ुदा रूहुल-क़ुद्स के ज़रिए, हज़रत ईसा अल-मसीह के रसूलन के वसीला से इंजील-ए-शरीफ़ के नाज़िल फरमवलन।

ख़ुदा के तरफ़ से नाज़िल कइल गइल इंजील-ए-शरीफ़ सबसे पहिले यूनानी ज़बान में लिखल गइल।

आजो बहुत लोग एकरा के यूनानी ज़बान में पढ़ेला अउर ओकर मुताला करेला।

बेशक, कुछ लोगन के इंजील-ए-शरीफ़ के बारे में एह वजह से इश्तिबाह, यानी शक हो जाला कि एकर तर्जुमा बहुत सारा दोसरा ज़बानन में कइल गइल बा।

बाकिर जब कवनो किताब के तर्जुमा कइल जाला, त असल ज़बान में मौजूद मज़मून हरगिज़ ना बदलेला।

इंजील-ए-शरीफ़ के यूनानी नुस्ख़ा में कवनो तब्दीली नइखे भइल।

इंजील-ए-शरीफ़ के सत्ताईस हिस्सा बा, जेकरा के हम किताब कहिले बानी।

पहिला चार हिस्सा चार इंजीलन पर मुश्तमिल बा, जे हज़रत ईसा अल-मसीह के ज़िंदगी अउर उनकर तालीमात के बयान पेश करेला।

ई हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में चार चश्मदीद गवाही बा, जे हज़रत मत्ती, मरक़ुस, लूक़ा अउर यूहन्ना (रज़ियल्लाहु अन्हुम) तहरीर कइलन।

कुछ लोग एह बात पर उलझन में पड़ जाला कि चार इंजील काहे बा।

क़ादिर-ए-मुतलक़ चार इंजील एह खातिर अता कइलन कि ई इंजील-ए-शरीफ़ के सच्चाई के चार गवाह बा।

अदालत में अक्सर खाली एगो गवाही क़ाबिले-क़बूल ना मानल जाला, बाकिर जब चार ईमानदार आदमी एके बात के गवाही देलें, त ऊ गवाही साबित हो जाला।

ओइसहीं ख़ुदा अपना रहमत में चार गवाही दिहलन, ताकि हमनी हज़रत ईसा अल-मसीह के सच्चाई के बारे में पूरा यक़ीन रख सकीं।

चार इंजीलन के बाद रसूलों के आमाल के किताब आवेला।

“Apostles” अंग्रेज़ी लफ़्ज़ बा, जेकर मतलब रसूल होला।

ई किताब एह बात के गवाही देला कि हज़रत ईसा अल-मसीह कइसे आसमान पर उठा लिहल गइलन, अउर फेर अपना काम जारी रखे खातिर रूहुल-क़ुद्स के अपना रसूलन पर नाज़िल कइलन।

एहके बाद आवे वाली इक्कीस किताब रसूलन के ऊ इल्हामी ख़त बा, जे ऊ लोग हज़रत ईसा अल-मसीह के शुरुआती पैरवीकारन के लिखलन।

ई तमाम लोग हज़रत ईसा अल-मसीह के क़ियामत के चश्मदीद गवाह रहल।

जे कुछ ऊ लोग लिखलस, ओह में रूहुल-क़ुद्स उनकर रहनुमाई करत रहलन।

रसूल पतरस (रज़ियल्लाहु अन्हु) दूसरा पतरस 1:20-21 में एह बारे में लिखलन:

"किताब-ए-मुक़द्दस के कवनो नुबूवत नबी के अपनी ताबीर से ना होला, काहे कि कवनो नुबूवत इंसानी मरज़ी से ना आइल, बल्कि इंसान रूहुल-क़ुद्स के हिदायत से ख़ुदा के तरफ़ से बोलत रहलन।"

इंजील-ए-शरीफ़ के ई आयत गवाही देला कि ख़ुदा कइसे रसूलन के रहनुमाई कइलन अउर उनकरा के कलाम-ए-ख़ुदा लिखे खातिर क़ायम कइलन।

इंजील-ए-शरीफ़ के आख़िरी किताब के मुकाशफ़ा कहल जाला, जे यौम-ए-हिसाब के बारे में गवाही देला।

कुछ लोग इंजील-ए-शरीफ़ के एह हिस्सा पर एतराज़ कइले बा अउर कहेले कि ई उनकर तवक़्क़ोआत से मुख़्तलिफ़ बा।

ऊ लोग कहेला कि इंजील एगो ही किताब होखे के चाहीं रहे, जे सीधे हज़रत ईसा अल-मसीह पर नाज़िल भइल होखे।

बाकिर हक़ीक़त ई बा कि इंजील-ए-शरीफ़ शुरू से ही एह सत्ताईस किताबन पर मुश्तमिल रहल बा।

ई रूहुल-क़ुद्स के ऊ गवाही बा, जे रसूलन के ज़रिए हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में दिहल गइल।

आज इंजील-ए-शरीफ़ के तक़रीबन 5,800 क़दीम यूनानी नुस्ख़ा मौजूद बा, अउर एहके अलावा 15,000 से ज़्यादा दोसरा क़दीम नुस्ख़ा अउर हवाला पावल जाला।

एह तमाम क़दीम नुस्ख़न में ईहे सत्ताईस किताब मौजूद बा।

एह में से बहुत सारा नुस्ख़ा क़ुरआन से भी काफ़ी पहिले के बा।

ई नुस्ख़ा क़ुरआन के आवे से पहिले भी उहे रहलन अउर ओकर बाद भी उहे रहलन।

पिछला सबक से याद रखीं कि क़ुरआन कम-अज़-कम सौ मर्तबा एह बात के गवाही देला कि इंजील-ए-शरीफ़ कलाम-ए-ख़ुदा बा।

क़ुरआन ओही इंजील-ए-शरीफ़ के मौजूदगी के गवाही देला, जे सत्ताईस किताबन पर मुश्तमिल बा अउर जे क़ुरआन से पहिले मौजूद रहल।

इंजील-ए-शरीफ़ के सबसे मशहूर क़दीम नुस्ख़न में से एगो के कोडेक्स सीनाइटिकस कहल जाला, जे तक़रीबन 300 ईस्वी में नक़ल कइल गइल रहल अउर आज ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन में मौजूद बा।

एगो अउरी क़दीम नुस्ख़ा कोडेक्स वेटिकानस बा, जे तक़रीबन ओही दौर के बा अउर वेटिकन लाइब्रेरी, रोम में रखल बा।

हमार मक़सद ई बतावल बा कि आजो अइसन तक़रीबन 5,800 क़दीम नुस्ख़ा मौजूद बा।

हमनी के उन तक रसाई बा अउर हमनी ओकर मुताला कर सकेनी।

हम खुद एह हाथ से लिखल नुस्ख़न के तस्वीरन के मुताला कइले बानी।

रउआ भी एह तमाम नुस्ख़न के हर सफ़हा के तस्वीर इंटरनेट पर देख सकत बानी।

बस “The Center for the Study of New Testament Manuscripts” तलाश करीं, या सीधे www.csntm.org पर जाईं।

याद रखीं, क़ुरआन सूरह यूनुस, जे दसवीं सूरह बा, ओकर आयत 94 में फरमावेला:

"अगर तू ओह चीज़ के बारे में शक में बाड़ऽ, जे हम तोहरा तरफ़ नाज़िल कइले बानी, त ओह लोग से पूछऽ जे तोहरा से पहिले किताब पढ़त चल आ रहल बाड़े। बेशक तोहरा रब के तरफ़ से हक़ तोहरा लगे आ चुकल बा, एही से शक करे वाला लोग में से मत बनऽ।"

क़ुरआन हमनी के दावत देला कि हम पहिले के किताबन — यानी तौरात, ज़बूर अउर इंजील-ए-शरीफ़ — के तालीमात के तहक़ीक़ करीं।

इंजील-ए-शरीफ़ में कवनो तब्दीली नइखे कइल गइल।

आजो ऊ ओइसहीं बा, जइसन शुरू में नाज़िल कइल गइल रहल।

मेहरबानी करके अल्लाह के तरफ़ से नाज़िल कइल गइल एह ज़बरदस्त अउर बामक़सद वही के पढ़ीं अउर ओकर तहक़ीक़ करीं।